विद्यालय पत्रिका
"चेतना"

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

VIDYALAYA MAGAZINE
"CHETANA"

केन्द्रीय विद्यालय लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA LUMDING

2019.20

राम बहादुर राय, आई.आर.एस.ई.
मंडल रेल प्रबन्धक
Ram Bahadur Rai, IRSE
Divisional Railway Manager

सत्यमेव जयते

पूर्वोत्तर सीमा रेल
Northeast Frontier Railway
लामडिंग मंडल
Lumding Division
लामडिंग, होजाई - ७८२४४७
Lumding, Hojai - 782447

MESSAGE FROM THE CHAIRMAN

It gives me immense pleasure to know that Kendriya Vidyalaya N.F. Railway, Lumding is bringing out the Vidyalaya Patrika for the session 2019-20. Writing is one of the important competencies of any language and the Vidyalaya Patrika gives opportunities to the students to develop their writing skill through essays, poems, short stories, travelogue etc. It is a forum for building writers to express and share their thoughts, knowledge and experience with fellow students. Apart from that the activities and events which are held in the Vidyalaya are reflected in the Vidyalaya Patrika. In addition publication of the Vidyalya Patrika shows the efforts made by the Staff, Principal and Sangathan, to make te journey of learning simple, smooth and painless for each student.

I take this opportunity to compliment the Principal, Staff and students of the Vidyalaya for their efforts to make this Vidyalaya one of the best educational institutions of the Railway town Lumding. I wish you all and the Kendriya Vidyalaya N.F. Railway Lumding a magnificient future.

(Ram Bahadur Rai)
DRM/Lumding
& Chairman,
VMC/KV/LMG

☎: दूरसंचार 03674-263362
रेलवे RLY 54000
फैक्स दूरसंचार FAX: 03674-263362 0361-2606066
ई-मेल E-mail : drm@lmg.railnet.gov.in drmlmg1969@gmail.com

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

वरूण मित्र
(उपायुक्त)
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

संदेश

यह हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय, लामडिंग विद्यालय पत्रिका 'चेतना' के सत्र 2019-20 संस्करण का प्रकाशन करने जा रहा है। विद्यालय पत्रिका बच्चों की सृजनात्मक प्रतिभा का परिचय देती है। विद्यालयी पत्रिका में अपनी रचना छपी देख विद्यार्थी अत्यंत आनंदित होते हैं और साथ ही भविष्य में कुछ विशेष एवं खास करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। विद्यार्थियों का प्रोत्साहन करते हुए उनकी रचनाओं को संवार कर प्रकाशित करने से उन्हें प्रेरणा एवं मार्गदर्शन मिलता है।

पत्रिका विद्यालय की प्रगति और गतिशीलता का दर्पण होती है। मुझे विश्वास है कि विद्यालय पत्रिका 'चेतना' न केवल विद्यालय की विशेष उपलब्धियों को रेखांकित करेगी अपितु अन्य सभी गतिविधियों का लेखा-जोखा भी प्रस्तुत करेगी।

'चेतना' पत्रिका के प्रकाशन पर आपके इस प्रयास के लिए समस्त विद्यालय परिवार व पत्रिका के संपादकीय मण्डल को मेरी शुभकामनाएँ!

(वरूण मित्र)
उपायुक्त
केंद्रीय विद्यालय संगठन,
क्षे.कार्या., गुवाहाटी

शुभकामना संदेश

प्रिय,

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हुई कि केन्द्रीय विद्यालय, एनएफआर, लामडिंग सत्र 2019-20 के लिए अपनी विद्यालय पत्रिका 'चेतना' प्रकाशित कर रहा है । छात्रों के संपूर्ण विकास के लिए स्कूल पत्रिका बहुत आवश्यक है। मुझे इस प्रयास को वास्तविक बनाने के लिए शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के प्रयास को देखकर बहुत खुशी हुई।

मुझे यकीन है कि यह पत्रिका इस विद्यालय के छात्रों और शिक्षकों को अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए सर्वोत्तम संभव मंच प्रदान करेगी साथ ही यह उनके लेखन, कविताओं, लघु कथाओं, लेखों और यात्रा वृतांतों द्वारा उनकी सक्रिय भागीदारी का अवसर भी प्रदान करेगी। यह पत्रिका विद्यालय में दी जाने वाली गुणवत्तापूर्ण शिक्षा पर भी प्रकाश डाल सकेगी। परिवार के सभी सदस्यों को स्कूल की समस्त गतिविधियों, छात्रों की उपलब्धियों और समग्र रूप से विद्यालय की जानकारी देने का यह एक बेहतरीन तरीका है।

मैं विद्यालय को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए शुभकामनाएँ देता हूँ। मैं इस प्रयास का हिस्सा बनकर खुश हूँ । मेरा आशीर्वाद हमेशा इस स्कूल के होनहार विद्यार्थियों के साथ है, जो जल्द ही इस देश के भविष्य के अच्छे नागरिक बन जाएँगे ।

नामित अध्यक्ष की कलम से .....

श्री एन.के. सूत्रधार
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी
पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे लामडिंग गुवाहाटी

सहायक आयुक्त
श्री दीपक कुमार डबराल
के०वि०सं० गुवाहाटी संभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

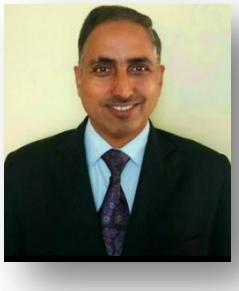

संदेश

छात्र-छात्राओं की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है विद्यालय की पत्रिका। यूँ तो छात्र-छात्राओं में रचनात्मक प्रतिभा बहुत अधिक होती है परन्तु आवश्यकता इस बात की है कि उन्हें उचित मार्गदर्शन मिले। बच्चों को यदि रचनात्मकता की दिशा में मोड़ दिया जाये तो वे बड़ी आसानी से अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हो जाते हैं। बच्चों को अपनी मौलिक अभिव्यक्ति के लिए पूरी स्वतंत्रता होनी चाहिए तभी वे अपने मन की बात लिखना सीख सकेंगे। बच्चों की रचनाओं में अपरिपक्वता तो रहती ही है परन्तु यह अपरिपक्वता ही उनकी मौलिकता का परिचायक है। छात्रों ने अपनी सृजनात्मकता तथा अपने विचारों को विद्यालय पत्रिका के माध्यम से एक गवाह के रूप में प्रदर्शित किया है। विद्यालय पत्रिका छात्रों द्वारा किये गए गतिविधियों का तथा विद्यालय के विकास का एक मनोरम दृश्य प्रकट करता है। 'चेतना' पत्रिका की यह अपनी विशेषता है कि इसके लिए छात्रों को मौलिक रचनाएँ
लिखने हेतु प्रेरित किया जाता है।

'चेतना' पत्रिका के प्रकाशन पर मैं विद्यालयी प्राचार्य एवं उन सभी अभिभावकों, छात्रों, शिक्षक-शिक्षिकाओं, विद्यालय प्रबंध समिति के सदस्यों को जिन्होंने पत्रिका के लिए अपनी रचनाएँ दी हैं एवं उन्हें प्रोत्साहित किया है, उन सभी को प्रोत्साहन व शुभकामनाएँ देता हूँ। पत्रिका के सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई देता हूँ। चेतना के इस प्रयास से छात्रों में निहित रचनात्मक प्रतिभा उभर कर सामने आ सकेगी तथा इन्हीं छात्रों में से भविष्य में कुछ अच्छे पत्रकार, लेखक व कवि के रूप में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बना सकेंगे यह मेरा सहज विश्वास है।

सहायक आयुक्त की कलम से...

श्री दीपक कुमार डबराल
के०वि०सं० गुवाहाटी संभाग

तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

संदेश

विद्यालय पत्रिका विद्यालय में होने वाली गतिविधियों का, विद्यार्थियों की प्रतिभाओं, उनकी क्षमताओं एवं उनकी मेहनत का तथा शिक्षकों के कठोर परिश्रम का समाज के समक्ष प्रकटीकरण करने का एक और सरल एवं सुगम माध्यम है ।

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय विद्यालय लामडिंग एक लम्बे अन्तराल के पश्चात् अपनी पत्रिका प्रकाशित करने जा रहा है, इस पत्रिका के प्रकाशन में समस्त शिक्षकों जिन्होंने अपने लेखों, कविताओं आदि के द्वारा अथवा संपादक के रूप में या प्रेरक के रूप में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है, समस्त विद्यार्थियों का जिन्होंने अपनी रचनाओं से पत्रिका को समृद्ध बनाया तथा छात्र संपादक के रूप में कार्य किया, विद्यालय प्रबंध समिति जिन्होंने इस पत्रिका के लिए अपना आशीर्वाद दिया तथा क्षेत्रीय कार्यालय के समस्त अधिकारियों का जिनके मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया, उनके लिए मैं हृदय की गहराइयों से आभार व्यक्त करता हूँ ।

मुझे विश्वास है कि हमारा यह छोटा सा प्रयास विद्यालय की प्रगति, विद्यार्थियों की प्रतिभाओं, शिक्षकों के प्रयासों का सजीव प्रसारण करने में सक्षम होगा तथा आपको हर्षित एवं गौरवान्वित होने का अवसर प्रदान करेगा ।

एक बार पुनः टीम केंद्रीय विद्यालय लामडिंग को उनके सद्प्रयासों के लिए ढेर सारी बधाइयाँ

संजय अग्रवाल

प्राचार्य

केंद्रीय विद्यालय लामडिंग

CONTENT

- VIDYALAYA STAFF PHOTOGRAPH 01
- SCHOOL MAGAZINE EDITORIAL BOARD 01
- EDITORIAL FOR THE VIDYALAYA PATRIKA 02
- **HINDI SECTION**
- शिक्षा- मेरा दृष्टिकोण - *संजय अग्रवाल* (प्राचार्य) 06
- कला और कला की शुरुआत - *रविप्रकाश चौहान* 09
- दरवाजा (प्रवेशद्वार) - *राजेश कुमार महावर* 10
- रफ्तार - *श्रीमती कोमल श्री* 10
- बचपन - *अमृता कुमारी यादव* 11
- विद्यालय की राहों में - *अंजली कुमारी* 11
- बचपन में अकसर - *अपराजिता सिंह* 12
- मेरी प्यारी माँ - *अपराजिता सिंह* 12
- माँ मुझे तू बहुत याद आती है - *अजय सिंह* 13
- जिन्दगी है छोटी - *दीपाली मीना* 14
- डर के आगे जीत है - *ममता दास* 15
- एक अच्छा विद्यार्थी कैसे बनें ? - *राजेंद्र लाल रजक* 16
- अंटाइटल स्टोरी - *संदीप कुमार* 18
- जीवन - *ब्रह्मा नन्द कोली* 20
- शिक्षक को आह्वान - *ब्रह्मा नन्द कोली* 21
- ART GALLERY 22-23
- REGIONAL LANGUAGES SECTION
- ASSAMESE - BHUPEN MAMA LOI SHRADDHANJALI - *SUDIPTA DAS* 25
- SANSKRIT - SANSKRIT BHASHAYAN MAHATTWA - *AMRITA KUMARI YADAV* 26
- SAMAYAH - *DIGANGANA SHARMA* 26
- ESHA MUM DHANYA MATA - *TRISHIT* 27
- VYARTHAM - *ARPITA CHOWDHURY* 28
- SHUBH YATRA - *ARCHITA* 28
- BENGALI – BIDAI - *SUSHMITA MAJUMDAR* 29
- MAA AASHCHEN - *SAMRIDDHI SARKAR* 30
- **ENGLISH SECTION**
- A THUNDERSTORM - *AMRITA KUMARI YADAV* 32

- ARTIFICIAL INTELLIGENCE - AKARSHAN GHOSH 32
- SPACE JUNK - *ANKUSH PAUL* 33
- BEING HELPFUL - *ALOK KUMAR YADAV* 34
- IMPORTANCE OF TECHNOLOGICAL LITERACY - *PRONOY K. LODH* 34
- IS TIME TRAVEL POSSIBLE? - *SUBHAYAN BISWAS* 35
- SCHOOL LIFE - *SUDIPTA DAS* 36
- PLANT A TREE - *PRIYAM DAS* 36
- THE MAN IN AN ONION BED - *ANNISHA DEY* 37
- WHAT IS GOD - *GITAVI DAS* 37
- TEACHER - *ANYA SINGH* 37
- THE SCHOOL - *BEENITA DAS* 37
- WAY TO PARADISE - OOTY - *SOUMILI DAS* 38
- WHY SINGLE USE PLASTIC SHOULD BE BANNED - *DIGANGANA SARMAH* *39*
- SCALING THE NATURAL SKYSCRAPER - *PRASHNIK NANDY* 40
- PRIVATIZATION OF PUBLIC SECTOR UNDERTAKINGS - *R.P. SINHA* 41
- GREEN FRONDS IN THE WIND - *ANU RACHEL JOGI* 43
- SHORT COMMUNICATION : INFORMATION LITERACY IN DIGITAL AGE -*DK. JHA* 44
- FROM A BOOKWORM'S CHRONICLES - *BHANITA DAS* 46
- MATHS : A CHALLENGE - *RAVI KUMAR* 48
- MUSIC FOR A BETTER WORLDVIEW OF EDUCATION - *GAGANDEEP SINGH* 49
- NECESSITY IS THE MOTHER OF ALL INVENTIONS - *SANDHYA KUMARI RAY* 50
- A TALE OF A PENCIL - *BABY KUMARI* 51
- CLASS I TO XII PHOTOGRAPH GALLERY 52-63
- ART GALLERY 64-67
- PHOTOGRAPH GALLERY OF VIDYALAYA ACTIVITIES 68-76

----------x----------

K.V. LUMDING STAFF

EDITORIAL BOARD

Editorial for Vidyalaya Patrika

On the very onset, let me re-tell you a very familiar story. A tortoise and a hare were friends. But wherever they went, the hare got bored of waiting for the tortoise to walk and catch up to him. Shopping with his friend was such a herculean task. It would take them weeks to finish buying groceries for a day. One day, the hare decided to prove his point, he went and talked to his friend about this problem. The tortoise sat down thinking. He said, "My dear friend, I have given it quite a lot of thought too. But we cannot give up our friendship because I am slow. Let us find another way to solve it." The hare agreed. He came up with a brilliant idea. "What if we grow you a pair of wheels!" , he said. The tortoise loved the idea. Both friends met and designed a vehicle for the tortoise that would help him travel faster. They got together and spent days and nights. Finally they built the vehicles. They organized a race to prove their point. All the animals gathered to witness it. There was so much celebration around. Finally, the race began. The hare and the tortoise on wheels started running. At the end of the race, the hare won it since no machine can replace the determination of a living creature and the tortoise reached only a few seconds later because he learnt to utilize a machine according to his need. What about a society where the tortoise is not forced to run a race against a hare who is born faster than him, or humiliate a hare for centuries in stories for making a mistake at a race.

There's a saying in Assamese "Ji mula barhe taar dupatote sin". In English, we say, "Morning shows the day." We, as teachers, have always felt there's something incorrect with the above statement. Some things, or in our case, people, take time to grow up and flourish. And sometimes, we are just forcing people to do jobs they are not interested in, and meanwhile hindering them from doing

what they love to. As teachers, our foremost job is to nurture the spirit of children and young people; provide them with the necessary environment for the healthy growth of their spirit, nature, character, habits, and most importantly emotions. Although that is the purpose of education, the question still remains largely unanswered is – how. How do we contribute to the wholesome development of our students. Well, we personally, feel very reassured to say that a magazine gives students as well as teachers the adequate platform to explore their specific talents at writing. In this Vidyalaya Patrika, we have made a sincere attempt at doing so. But, since it is our first attempt, mistakes are inevitable. We look forward to your invaluable opinion that will help strengthen us for the times to come and in our future endeavours. We would like to take this opportunity to thank all our senior authorities for their encouragement, help, guidance and suggestions. We hope that keeps shining above us forever.

Editorial Board.

Vidyalaya Patrika 2019-20

K.V. Lumding.

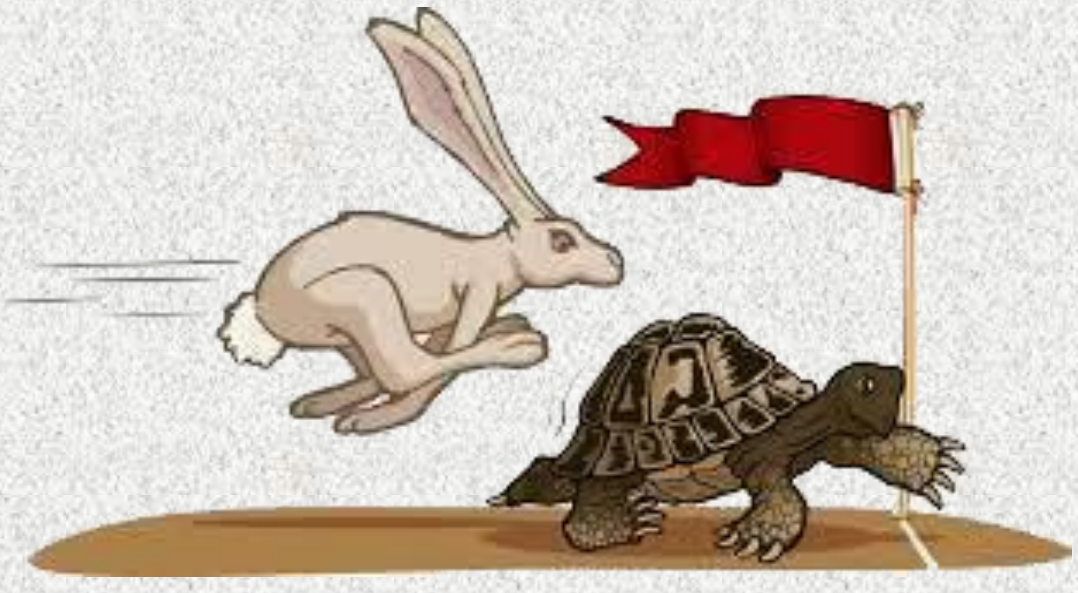

Creative Editors

Ravi Prakash Chauhan
TGT (ART Edu.)

Sandhya Kumari Ray
(PRT)

हिन्दी अनुभाग

राजेश कुमार महावर
पी0जी0टी0 (हिन्दी)

ब्रह्मानन्द कोली
टी0जी0टी0 (हिन्दी)

डॉली पाण्डे
12वीं (ब)

के0 जयश्री ब्रह्मा
10वीं (अ)

संपादकीय मंडल सदस्य

शिक्षा- मेरा दृष्टीकोण

प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह अच्छा, सुविधासंपन्न, एवं सुखी जीवन व्यतीत करे | लेकिन ये होगा कैसे? शिक्षा एक ऐसा साधन है जो व्यक्ति के व्यवहार एवं कर्म में सकारात्मक परिवर्तन कर उसे एक सुखी जीवन व्यतीत करने में मदद करता है| अगला प्रश्न आता है कि यह होगा कैसे? इसके २ माध्यम हो सकते हैं एक औपचारिक शिक्षा दूसरी अनौपचारिक शिक्षा |

औपचारिक शिक्षा का केंद्र विद्यालयों को माना जाता है| यदि हम सोचें की विद्यालय क्या है? क्या यह एक ईमारत है? या यह एक ऐसा स्थान मात्र है जहाँ विद्यार्थी अपने शिक्षकों से मिलते हैं | वास्तव में यह एक ऐसा स्थान है जहाँ सभी मिलकर विभिन्न कार्यक्रमों के दवारा ज्ञान का सृजन करते है, ऐसा ज्ञान जिसे शिक्षार्थी उपयोग कर अपने जीवन में सुखी रह सके | इसे ऐसे समझ सकते हैं

केंद्र स्थान सृजन उपयोग

शिक्षा → विद्यालय → कार्यक्रम → ज्ञान → सुखी जीवन

यह तो सिद्ध हो चुका है कि शिक्षा व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन लाती है , पर कैसे ? यह एक प्रक्रिया है जिसमें एक बड़े लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कई छोटे-छोटे उद्देश्यों को पूरा करना होता है| शिक्षा के वह उद्देश्य कौन-कौन से हैं? ------------------------------?

शिक्षा के दवारा हम ज्ञान का विस्तार करते हैं, विभिन्न कौशलो का विकास करते है तथा जीवन मूल्यों का संधान करते हुए उन्हें अपने जीवन में प्रकट करते हैं| और इस प्रकार हमारे व्यवहार में परिवर्तन होते हैं जो कि शिक्षा का लक्ष्य है|

शिक्षा के उद्देश्य : १. ज्ञान का विस्तार
२. कौशलों का विकास
३. जीवन मूल्यों का संधान एवं प्रकटीकरण |

ज्ञान क्या है? कभी-कभी सूचनाओं को ज्ञान समझने की भूल हो जाती है और हम पुस्तकों में वर्णित सूचनाओं को ही ज्ञान का दर्जा देने लगते है एवं उसकी प्राप्ति अथवा उसे याद करने को ही अपना कर्तव्य समझ लेते हैं| ज्ञान के विषय में मेरा विचार है कि-

"कर्म करने से ज्ञान का सृजन होता है तथा ज्ञान का उपयोग करके ही कर्म किये जा सकते हैं"

यह एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है इसलिए सीखना जीवन भर चलता रहता है |

ज्ञान केवल शिक्षण से ही प्राप्त नहीं किया जा सकता अपितु ज्ञान सीखने का ही पर्याय है अतः विद्यालयों में सीखने पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए न कि केवल शिक्षण पर | इसलिए सीखना (लर्निंग) ही पूरी विद्यालयीन प्रक्रिया के मूल में होना चाहिए | अब सीखने को लेकर भी एक भ्रम है कि किसी शिक्षार्थी ने याद कर लिया तो माना जाता है कि वह सीख गया या वह परीक्षा में अधिक अंक लेता है तो माना जाता है कि वह सीख गया | क्या वास्तव में याद करना ही सीखना है?

सीखना भी एक प्रक्रिया जिसे हम ऐसे समझ सकते हैं---

जानना ⟶ समझना ⟶ मनन करना ⟶ ज्ञान का प्रयोग करना

(Knowing) (Understanding) (Analysing) (Application)

इस सीखने की प्रक्रिया को समाज के विभिन्न घटकों जैसे विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक, समाज के अन्य सदस्य एवं संस्थानों से परस्पर अंतर्क्रिया (interactions) कर पोषित करते रहना चाहिए |

अब में विद्यालयी शिक्षा की प्रमुख चुनौतियों के बारे में बात करना चाहूँगा | ३ प्रमुख चुनौंतिया हैं-

१. शिक्षक केन्द्रित २. कक्षा कक्ष केन्द्रित ३. पाठ्य पुस्तक या पाठ्यक्रम केन्द्रित |

बाल केन्द्रित शिक्षा :- आज भी कक्षाओं में केवल शिक्षक की ही आवाज गूंजती है, उसी के कथन को सम्पूर्ण ज्ञान मान लिया जाता है, वही निर्धारित करता है कि क्या सीखना है, कैसे सीखना है, व कितना सीखना है | बच्चों की आवाज गुम हो गयी है, उसके विचारों, उसके प्रश्नों को, उनकी इच्छाओं एवं उनकी गतिविधियों को समुचित स्थान नहीं दिया जा रहा है यही कारण है कि जैसा परिणाम हम चाहते है वैसा हमें नहीं मिलता |

शिक्षा को बाल केन्द्रित होना चाहिए क्योंकि उसे ही सीखना है| अतः उसकी आवाज, उसकी इच्छाएं उसके विचार, उसके प्रश्न एवं उसकी गतिविधियों को पूरा सम्मान देना होगा, उसी को केंद्र मै रख कर सभी शैक्षणिक प्रक्रियाओं को संचालित करना होगा तभी सही मायने में शिक्षा का उद्देश्य पूरा हो सकेगा |

समाज केन्द्रित शिक्षा :- हमने यह भी मान लिया कि शिक्षा केवल कक्षा कक्ष में ही दी जा सकती है इसलिए हम ज्ञान के, सीखने के प्रमुख स्रोत समाज को, विद्यालय के पर्यावरण को उपेक्षित कर देते हैं | मेरा मानना है कि सम्पूर्ण विद्यालय परिसर, उससे भी ज्यादा सम्पूर्ण समाज को केंद्र मान कर अपनी शिक्षण योजना बनानी चाहिए क्योंकि बच्चा उसी समाज से आया है और उसी समाज को अपना कर्मक्षेत्र बनायेगा | शिक्षार्थियों को भी कक्षा (क्लास) से बाहर फैले हुए ज्ञान के विशाल स्रोत का उपयोग अपने सीखने के लिए करना चाहिए |

ज्ञान केन्द्रित शिक्षा :- तीसरी सबसे अहम् चुनौती है शिक्षा आज पाठ्य पुस्तक एवं पाठ्यक्रम तक सीमित कर दी गयी है | यह माना जाता है की जितना भी ज्ञान है वह पाठ्य पुस्तकों में ही है और उसकी हदबंदी (boundary) पाठ्यक्रम (syllabus) ने निर्धारित कर दी है | मेरा स्पष्ट मानना है कि पाठ्य पुस्तक एवं पाठ्यक्रम केवल माध्यम हैं, दिशा देने का कार्य करते हैं | शिक्षा को ज्ञान केन्द्रित करने की आवश्यकता है ज्ञान चाहे जहाँ से भी मिले, प्राप्त करना चाहिए | विद्यार्थी, उसका परिवेश, शिक्षक, समाज, पुस्तकें, तकनीक, सोशल मीडिया, इन्टरनेट की दुनियां आदि अनेकों साधन हैं जिनका उपयोग ज्ञान प्राप्ति के लिए किया जा सकता है |

एक पुस्तक में मैंने पढ़ा था की शिक्षा के ४ स्तम्भ हैं

1. **Learning to Know**
2. **Learning to Do**
3. **Learning to Be**
4. **Learning to live together**

अंत में शिक्षा जगत से जुड़े सभी बंधुओं से आग्रह है कि हम सभी शिक्षा के प्रमुख लक्ष्य, उसके महती उद्देश्यों एवं वैज्ञानिक प्रक्रिया को आत्मसात करते हुए उसकी वर्तमान चुनौतियों से जूझ कर अपना जीवन उन्नत एवं सुखी बनायें | आपके सफल जीवन की ढेरों शुभकामनाएं |

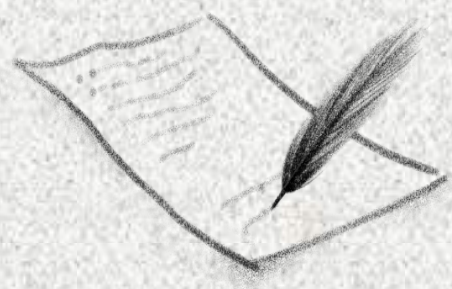

संजय अग्रवाल
प्राचार्य
केंद्रीय विद्यालय लामडिग

कला और कला की शुरूआत

कला कलाकार की आत्माभिव्यक्ति है, कला एक सार्वभौमिक भाषा है। आज हम जिस तरफ भी देखें हमें कला किसी न किसी रूप में नज़र आती है, हम जिस पेन से लिखते हैं उसको भी किसी कलाकार ने रूप दिया है। कुर्सी–मेज, दरवाजे–खिड़की, कपड़े आदि हर एक चीज को कलात्मक रूप से बनाया गया है। हम कोई भी सामान लेते हैं तो उसका रंग–रूप जरुर देखते हैं और हमारे पसंद की होने पर ही हम उस सामान को खरीदते हैं इसके पीछे भी हमारी कलात्मक रूचि ही वजह होती है। जो लोग बोलते हैं मुझे कला में कुछ नहीं आता दरअसल उन्हे भी पता नहीं होता कि उनके अंदर कलात्मक सौन्दर्य की समझ पहले से ही है तभी वो एक चाय पीने का कप भी खरीदने जाएँ तो उसका डिजाईन पसंद कर के ही उसे खरीदते हैं। यहाँ तक कि जो लोग आज की आधुनिक कला (मॉडर्न आर्ट) को देख कर सवाल उठाते हैं कि ये क्या टेढ़ा–मेढ़ा अजीब सा चीज बना रखा है, वही लोग जब बाजार से कोई सामान खरीदने जाते हैं तो उन्ही वस्तुओं को पसंद करते हैं जिसपे वही टेढ़ी–मेढ़ी आधुनिक कला रूप बनी होती हैं, यही है कला के प्रति उनकी आत्मा उनके मन की समझ।

आज कला के जिस रूप को हम देख रहे हैं उसकी शुरुआत कब हुई, कैसे हुई और क्यों हुई– हमें भारतीय और यूरोपियन आदिकालीन गुफाओं में आदिमानव द्वारा निर्मित चित्रकला के उदाहरण प्राप्त हुए हैं जिससे अब हमें यह पता है कि कला की शुरूआत तो तभी हो गयी थी जब मनुष्य जंगलों गुफाओं में रहा करता था। प्राचीन मानव जो कि बोलना और लिखना भी नहीं जानता था, उसने कला को अपनी अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अपनाया। आदिमानव जंगलों में रहता था, जहाँ उसका सामना नरभक्षी जानवरों से होता था, उनको डराने के लिए वो पत्थरों लकड़ियों आदि को टकरा कर तथा मुँह द्वारा विभिन्न आवाजें निकालता था, जिससे वो उन जानवरों को डरा सके और जान बचा सके, इसी का विकसित रूप हमें आज संगीत कला व गायन कला के रूप में दिखता है। आदिमानव एक दूसरे को हाथों भाव–भंगिमाओं द्वारा अपनी भावनाएँ व्यक्त करता था, जो कि आज विकसित रूप में नृत्यकला व मंचकला के नाम से जाना जाता है। वो जानवरों का शिकार कर के अपना पेट भरता था और इसी की योजना करने के लिए आदिमानवों ने गुफाओं की दिवारों पर प्रथम रेखांकन किया, इसका विकसित रूप हमें चित्रकला के रूप में मिलता है। आदिमानव ने पत्थरों को काटकर औजार बनाए जिसका विकसित रूप आज हमें मूर्तिकला के रूप में दिखता है। इस प्रकार कला के विभिन्न रूप जो आदिकालीन मानव की जरूरतों से शुरू हुई थीं, आज जबकि मानव बहुत विकसित हो चुका है, कलाएँ भी विकसित हो कर अपने आधुनिक रूप में हमारे सामने हैं। भौतिक आवश्यकताओं से शुरू हुई कला आज मानसिक संतुष्टि के रूप में देखी–अपनायी जाती है यही कला का उच्चतम विकास है।

रविप्रकाश चौहान (प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक कला)

दरवाजा (प्रवेशद्वार)

दरवाजा है आने-जाने का प्रवेश द्वार,
ज्ञान का प्रवेश एवं अंधकार का तिरस्कार ।
हर घर-बार का होता है एक प्रमुख द्वार,
सफलता एवं परचम का है मुख्य राजदार ।
निरंतर बाट जोहना, लोगों का मुँह ताकना,
अतीन्द्रियों को रोकना, ज्ञान का मुँह खोलना ।
दरवाजे से आना, रहना, बस जाना,
दरवाजे से वीतराग या चले जाना ।
नई दुनिया में प्रवेश, नूतनता को जानना,
बदहवासी में खोना या सफलता को पाना ।
है यह निर्जीव प्रहरी, सक्षम, मजबूत,
शांति एवं समृद्धि का होता है अग्रदूत ।

श्री राजेश कुमार महावर
स्नातकोत्तर शिक्षक (हिंदी)

रफ़्तार

जीवन के इस भागमभाग में
खो जाती है चाँदनी
न मिल पाती हैं गुनगुनाती रेशमी धूप ।
सुकून के दो पल चाहा था
मिल रही अंतहीन यात्रा की रफ़्तार ।
दिन की शुरुआत कब हो जाती है,
पता चलता नहीं,
शाम कब सरक जाती है हमकों
इसकी खबर मिलती नहीं ।
पता नहीं किस पथ पर कदम बढ़ रहे हैं ,
जहाँ अवकाश है नहीं
जिंदगी की इस धुन में,
खुद को वक्त मिल पाता नहीं ।
इस सफ़र, इस रफ़्तार में भी
छिपा है इक रूहानी एहसास
जब थक जाएँगे कदम तो शायद
यही एहसास जीने का सबब बन जाएगा ।
रफ़्तार बाँधे रखती है समय के चक्र से,
इक उम्मीद है ख्वाहिशों के नगर से ।
जब-जब विधाता ने चक्र सरकाया,
हमने भी तो कुछ खोया और कुछ पाया ।

श्रीमती कोमल श्री
प्रशिक्षित स्नातक शिक्ष (सा०अध्य०)

बचपन

एक बचपन का ज़माना था,
जिसमें खुशियों का खजाना था
चाहत चाँद को पाने की थी,
पर दिल तितली का दीवाना था...
खबर ना थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था...
थककर आना स्कुल से,
पर खेलने भी जाना था..
बारिश में कागज़ की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था...
रोने की वजह ना थी,
ना हँसने का बहाना था...
क्यूँ हो गए हम इतने बड़े इससे अच्छा तो वो
बचपन का ज़माना था
वो बचपन का ज़माना था।

अमृता कुमारी यादव
कक्षा-सात 'ब'

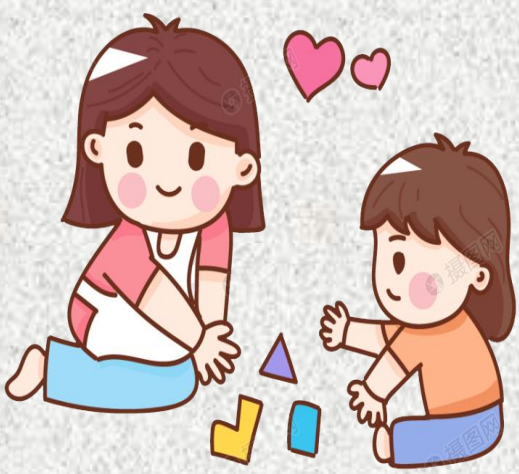

विद्यालय की राहों में

विद्यालय की राहों में
अपनी कश्ती उठाए हुए
पापा की ऊँगली पकड़
आँखों में सपने सजाए हुए
हम भी आए थे कभी
बस कल की ही बात है।

गुरुजनों का कुछ ज्ञान मिला
एक विद्यार्थी होने का सम्मान मिला
हमारे स्वप्न को एक उड़ान मिला
सखा सहेलियों का प्यार मिला
धन ज्ञान का बटोरे है
जो हर दौलत से बड़ी है
एक दुनिया बना बैठे थे हम भी
कुर्सी बेन्चों की ध्वनियों के बीच
कक्षा के हर कोने के पनाहों में
अपने विद्यालय की राहों में।

पुस्तकों के बीच उलझ कर
कुछ कर जाने का हौसला लिए
दुनिया की भीड़ में उतरे हम भी है
एक उत्साह और पागलपन के संग
नाम रोशन करने की दौड़ में हम भी है
हम कौन है ? यह पता कर लेना कल
हर गलियारों और चौराहों में
विद्यालय की राहों में
अपनी कश्ती उठाए हुए
हम भी आए थे कभी
बस कल की ही बात है।

अंजली कुमारी

कक्षा - बारह 'वाणिज्य वर्ग

बचपन में अक्सर

बचपन में अक्सर सोचा करते,
कितना अच्छा लगता है सभी को स्कूल जाना।

मैंने भी स्कूल को घर जैसा माना,
क्या मालूम था कि, मुझे यहाँ भी है रंग लगाना
हर गलती पर है पनिशमेन्ट खाना।

पहली बार जब मैं स्कूल आई
थोड़ी ही देर में बहुत गुस्साई
लगा था कि मुझे भी बहुत मजा आएगा
मुझे क्या पता था मुझे रोना आएगा।

पहली घंटी बजी मम्मी याद आई
दूसरी में बहुत चिल्लाई
फिर टीचर ने बहलाई, फुसलाई।

थोड़ी देर तक रही मैं चुप
फिर खुद को सँभाल न पाई
अगली घंटी में टीचर ने, मम्मी को बुलाई
फिर रोते-रोते में घर को वापिस चली आई
मैं घर को वापिस चली आई।

अपराजिता सिंह
कक्षा - बारह 'वाणिज्य वर्ग'

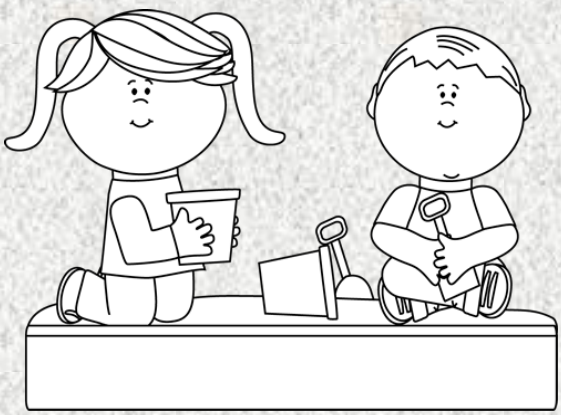

मेरी प्यारी माँ

माँ जब तुम दूर चली जाती हो
तब मुझे तुम्हारी याद आती है।

माँ तुम ही हो जो,
हजारों ग़मों में दो पल की ख़ुशी दे जाती हो ।

कोई समझे या न समझे मेरे दुःख को
तुम बिना कहे समझ जाती हो,
माँ जब तुम दूर चली जाती हो
तब मुझे तुम्हारी याद आती है।

वह पल आज मुझे अभी भी याद आती है
जब तुम लोरी गाकर मुझे सुलाती थी,
माँ जब तुम दूर चली जाती हो
तब मुझे तुम्हारी याद आती है।

माँ तुम अनमोल हो
तुम ही मेरे लिए ईश्वर हो
तुम ही मेरी जन्नत हो
सारा प्यार तुम्हीं से
माँ तुम भगवान की सुंदर रचना हो।

अपराजिता सिंह
कक्षा - बारह 'वाणिज्य वर्ग'

माँ मुझे तू बहुत याद आती है

माँ मुझे तू बहुत याद आती है, माँ मुझे तू बहुत याद आती है
तन्हाइयों में जब जिन्दगी हर मोड़ पर सताती है
माँ मुझे तू बहुत याद याद आती है ।

माँ मुझे तू बहुत याद आती है
सोते हुए नींद में जब परछाई सताती है

माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

यू तो रहता हूँ बहुत ही बिजी मैं अपनी नौकरी में
पर जब कभी कोई माँ अपने बच्चे के सिर पर हाथ फिराती है
माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

क्यूँ हूँ मैं यहाँ, दूर इतना सोचता हूँ
तो तेरी कोई बात ही मन शांत कर जाती है
माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

यूँ तो यहाँ भी हो गये है सभी अपने से
जब कभी कोई आवाज माँ कानों में आती है
माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

सीख रहा हूँ मैं चलना दुनिया की भीड़ में
जब तेरे प्यार भरे आँचल की याद सताती है
माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

यूँ तो बड़ा हो गया हूँ मैं, पता है मुझे
पर जब कभी बचपन की बातें रंग जमाती हैं
माँ मुझे तू बहुत याद आती है ।

अजय सिंह
प्राथमिक शिक्षक

जिन्दगी है छोटी

जिन्दगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ
काम में खुश हूँ, आराम में खुश हूँ

आज पनीर नहीं, दाल में ही खुश हूँ
आज गाडी नहीं, पैदल ही खुश हूँ

आज कोई नाराज हैं, उसके इस अंदाज से ही खुश हूँ

जिसको देख नही सकता,उसकी आवाज से ही खुश हूँ
जिसको पा नहीं सकता ,उसको सोच ही कर ही खुश हूँ

बीता हुआ कल जा चुका है,उसकी मीठी याद में खुश हूँ
आने वाले कल का पता नहीं, इंतजार में ही खुश हूँ

हंसता हुआ बीत रहा है पल, आज में ही खुश हूँ
जिंदगी है छोटी, हर पल में खुश हूँ ।

दीपाली मीना
प्राथमिक शिक्षिका

डर के आगे जीत है

एक बार एक लड़का गाड़ी चला रहा था। उस लड़के के पिताजी उसके साथ गाड़ी में बैठे थे। लड़का सोच रहा था कि आज का दिन बहुत अच्छा है, चलो किसी जगह कुछ देर के लिए गाड़ी को रोका जाए। तभी अचानक तूफ़ान आ जाता है। लड़के के लिए गाड़ी चलाना मुश्किल हो जाता है और वह परेशान हो जाता है। रास्ते में कुछ लोग अपनी गाड़ियों को तूफ़ान में ही रोककर खड़े थे। लड़के को समझ नहीं आ रहा था कि वह अब क्या करे ? उसने पिताजी से पूछा - पिताजी गाड़ी रोक दूँ , तो पिताजी ने जवाब दिया - नहीं, तुम गाड़ी को मत रोको और धीरे-धीरे चलाते रहो। लड़के को रास्ता कुछ अच्छे से दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी गाड़ी चलाते हुए आगे बढ़ा। अचानक लडके को सब कुछ एवं रास्ता साफ-साफ़ दिखाई देने लगा। वे तूफ़ान से बाहर आ चुके थे। अब लड़के के पिताजी ने उसे गाड़ी रोकने को कहा। तब लड़के ने पिताजी से कहा - पिताजी गाड़ी क्यों रोकूँ ? अब तो हम तूफ़ान से बाहर आ गए हैं। तब लड़के के पिताजी ने कहा - देखो, बेटा... वहाँ जितने भी लोग रास्ते में गाड़ी रोककर खड़े थे। वे अब तक तूफ़ान से बाहर नहीं आ पाए हैं और तुम उस तूफ़ान से डर रहे थे। तुम्हारी हिम्मत और साहस के कारण आज तुम उस तूफ़ान से बाहर आ गए हो।

शिक्षा- "जीवन में बहुत तूफ़ान आएँगे, परन्तु हमें डर को हटाकर हिम्मत और साहस से तूफ़ान से बाहर निकलकर सदैव आगे बढ़ते रहना चाहिए।"

ममता दास
कक्षा - दस 'ब'

एक अच्छा विद्यार्थी कैसे बनें ?

एक अच्छा विद्यार्थी हरफनमौला होता हैं | वह संस्कारी और आज्ञाकारी होता हैं | वह पढ़ाई के अतिरिक्त खेलकूद, विभिन्न गतिविधियों में सहभागिता दर्ज करवाना, अनुशासनशील होना, अपने से बड़ो का आदर तथा छोटों को स्नेह दें, गुरु का सम्मान करें, शिक्षकों के प्रति आज्ञाकारी हो, जागरूक, कौतुहल, परिश्रमी, साहसी,सकरात्मक दृष्टिकोण रखनेवाला, शिविरों में जाना, माता-पिता की सेवा करनेवाला तथा अपनी मातृभूमि के प्रति आवश्यकता पड़ने पर प्राण न्यौच्छावर करने के लिए तत्पर हो | एक अच्छा विद्यार्थी एक अच्छा तैराकी एवं एक अच्छा पाचक भी होता है | उनमे एक नेतृत्व की शमता होनी चाहिए | वह समयनिष्ठ होता है | वह संगीत विद्या में भी रूचि रखता है |

आओ जाने ! एक अच्छे विद्यार्थी के क्या क्या गुर होने चाहिए |

1. आस्तिक – एक अच्छा विद्यार्थी ईश्वर पर आस्था रखता है | वह अपना हर एक कार्य एक विश्वास के साथ करता है |

2. अनुशासनशील - एक अच्छा विद्यार्थी कभी भी अनुशासनहीनता का परिचय नहीं देता है | वह अनुशासनशील होता है | वह जीवन के हर एक क्षेत्र में अनुशासनमें रहकर कार्य करता है |

3. समयनिष्ठ - एक अच्छा विद्यार्थी समय के अनुसार कार्य करता है | उसके पास अपना एक समय सारिणी होती है | वह टाइम मैनेजमेंट जनता है कि पढाई किस तरह करनी चाहिए और कब करनी चाहिए और इसके अतिरिक्त अन्य कर्यकलापों को भी किस तरह संतुलन बनाकर किया जा सकता है इसका ज्ञान एक अच्छा विद्यार्थी अच्छे से जानता है | वह समय का नियोजन कर हमेशा कार्यों का निष्पादन करता है |

4. कौतुहल - एक अच्छा विद्यार्थी जिज्ञासु होता है | वह हर समय क्यों और कैसे पर प्रश्न किया करता है | वह अपने आसपास की, समाज में होने वाले छोटे से छोटे गतिविधियों की जानकारी रखता है |

5. आदर का भाव - एक अच्छा विद्यार्थी वह होता है जो सबके प्रति आदर का भाव रखता हो और तभी वह सच्ची ज्ञान हासिल करने में सक्षम होगा अन्यथा ज्ञान की प्राप्ति का तप और कठिन हो जायेगा |

6. जिम्मेदारी - एक अच्छा विद्यार्थी जिम्मेदारी लेने के लिए हरदम तैयार रहता है और उसे पूरी निष्ठा के साथ उसका निर्वाह भी करता है | वह अपने अध्यापकों द्वारा सौपी गयी कार्यों को नियत समय पर पूर्ण करके जांच करवा लेता है |

7. परिश्रमी - एक अच्छा और सच्चा विद्यार्थी अधिक से अधिक अभ्यास करता है और अपने लक्ष्य पर आसानी से पहुँच जाता है |

8. लीडर - एक अच्छा विद्यार्थी एक अच्छा लीडर होता है | वह अपने कक्षा के साथ साथ पुरे विद्यालय का भी लीडर बनने के लिए उत्सुक रहता है |

9. शिविर - एक अच्छा विद्यार्थी शिविरों में भी जाता है और शिक्षा के आनंद के साथ - साथ जीवन का भी लुफ्त उठाने में भी चूकतें नहीं हैं | कैम्पिंग में जाने से सबसे बड़ा लाभ यह है कि जो हम किताबों में पढ़ कर तीन महीनो में सीखते हैं वही चीज तीन दिनों के शिविर में जाने से हम सीख सकते हैं |

10. गाइड - एक अच्छा विद्यार्थी अच्छा गाइड(मार्गदर्शक) भी होता है | वह दुसरे छात्रों को भी मदद करता है जो पढ़ाई में कमजोर है तथा उनके समस्याओं को भी सुलझाने का प्रयत्न करता है | वह अपडेट रहता है और दूसरों को भी अपडेट करता है | वह समय पर अपने गुरुजनों की भी कार्यों में हाथ बटाने में पीछे नहीं रहते | वह तकनीक और तकनीकी का इस्तमाल बखूबी जानता है | इसी वजह के कारण वह शिक्षक के आँखों के तारे बन जाते हैं |

11. देशप्रेमी - एक अच्छा विद्यार्थी देशप्रेमी होता है | वह अपने वतन से बेहद प्रेम करता है | वह समाज में कल्याणकारी बदलाव ही नहीं लाता है बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी सहायक होता है.|

12. समग्र - एक अच्छा विद्यार्थी में उपर्युक्त गुणों और कौशल के कारण समग्र विकास होता हैं और वह देश का एक सुनागरिक कहलाता है | सात ही साथ वह अच्छा विद्यार्थी बन जाता है जो हर चुनोतियों का सामना करने के लिए सक्षम हो जाता है | कोई भी बाधाएं उन्हें रोक नहीं सकती कारण उनमे शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास हो जाता है | अतः एक अच्छा विद्यार्थी का जीवन ही आदर्श जीवन कहलाता है |

राजेंद्र लाल रजक
प्राथमिक शिक्षक
के.वि.लामडिंग

अंटाइटल स्टोरी

दो महीने पहले ही जन्मदाता का साया सर से उठ चुका था लेकिन शायद यह कम था उस वर्ष इतनी बारिश हुई की। कि बाढ़ की स्थिति पैदा हो गई कच्ची मिट्टी का घर था वह बाढ़ के पानी के साथ बह गया था।

वो दिन मई कभी नही भूल सकता, जब माँ ने अपने चारो बेटो को अपने अंचल में छुपा रखा था जो आंगन के बिल्कुल बीचों बिच खड़ी थी , क्योंकि एक ही कमरा था वह भी कच्ची मिट्टी का जो बाढ़ के पानी के साथ बहा चुका था धीरे –धीरे बारिश कम हुई और लोगों ने रहत की साँस ली सरकार के आदेशानुसार बाढ़ में जिसका मकान गिरा है उसको पाँच हजार की आर्थिक दी गई सरकार की दी गई सहायता से सिर ढकने के लिए छत बन तो गई थी लेकिन अभी भी कोई आय का साधन न होने के कारण ग़रीबी , बेबसी,लाचारी पीछा छोडने को तैयार नही थी।

माँ ने मेहनत मजदूरी करना शुरू किया। बडा भाई उस समय कक्षा आठ में पढता था , वह भी माँ के साथ काम पर जाता था ,तो पढ़ाने में कमजोर रह गया और फेल हो गया। यह उस समय की बात है जब मेरा सबसे छोटा भाई एक साल का था, उसको संभालने की जिम्मेदारी मुझे दी गई थी। मैं दोनों काम एक साथ करता था पढ़ना और भाई को संभालना ।

समय कैसे चला गया पता ही नहीं चला और नवीं कक्षा में जा चुका था। वो दिन मेरे लिए हमेशा यादगार बना रहेगा जब मैं नवी कक्षा में पढ़ते-पढ़ने मज़दूरी करना शुरू किया और मेरी पहले दिन की कमाई 70रुपये थी। उस दिन के बाद जो भी काम मिलता मैं कर लेता था और मेरी मजदूरी कब 70 रुपये से बढ़कर 450 रूपये हो गया पता ही नहीं चला मैं कहीं पर भी काम करने जाता था। अपनी एक,दो पुस्तक साथ ले जाता था जब भी समय मिलता मैं पढ़ लेता था क्योंकि उस समय मोबाइल ,यु-ट्यूब ,गूगल नहीं था। एक बार की घटना बताता हूँ कि चार मंजिल ईमारत पर काम कर रहे थे अचानक वहाँ से मेरा पैर फ़िसल गया और मैं सीधा नीचे जमीन पर गिर पड़ा दोनों हाथ टूट गए और काफ़ी चोटे भी आयी चोंटे तो धीरे-धीरे भर गई , लेकिन वो चोट अभी तक नहीं भरी थी जिसके के कारण मेरी यह दुर्दशा हुई थी वो थी ग़रीबी। दिन-रत अपने घर की टूटी-फूटी दीवारों को देखकर सोचता रहता था कि पता नहीं कब मैं इस योग्य बनूँगा। कि इन दीवारों को नया रूप दे सकूँ ।

मेरे एक दादा जी कानपुर रहते थे तो उनका परिवार अब कानपुर छोड़कर गाँव आ चुका था उस परिवार में एक मेरा बचपन का दोस्त था जो सेटरिंग(मकान की छत) का काम जानता था उसने गांव में काम करना शुरू किया तो उसने मुझे भी साथ ले लिए। दोनों काम करते रहे और पता ही नहीं चला कि कब मेरी ग्रेजुएशन पास हो गई वो भी सिर्फ़ दो जोड़ी कपड़ो के साथ। हाथ टूटने के बाद हड्डी तो जुड़ गई थी लेकिन घाव दो साल तक नहीं भरा।

एक तरफ हाथ में घाव चल रहा था दूसरी तरफ़ मास्टर डिग्री। ना जाने कितने ऐसे दिन मुझे आज भी याद हैं जब लू चलने के कारण तापमान 50डिग्री के करीब चला जाता था धरती आग की तरह जलती थी और हम सेटरिंग का काम करते हुए आग की तरह जलाते हुए लोहे की राड़ को हाथ से पकड़ कर काटते थे। लोहे का काम करते हुए ना जाने कितनी बार चोटिल हुए। लोहे का काम भी चलता रहा और मेरी मास्टर डिग्री भी।

समय के चलते कब मास्टर डिग्री पूर्ण हो गई पता ही नहीं चला कि हाथ की चोट दुबारा ओपरेशन की वजह से ठीक हो चुकी थी लेकिन वो बचपन वाली चोट अभी तक परेशान कर रही थी,जिसका नाम था ग़रीबी।

सरकार के आदेशानुसार मास्टर बनने के लिए बी०एड० करना जरुरी हो गया था लेकिन आर्थिक स्थिति सही ना होने की वजह से नहीं कर सका। एक चाचा ने 20,000 रुपये उधार दिया और मैंने खुद मजदूरी करके फ़ीस एकत्रित किया तब जा कर बी०एड० पूरी हुई। यह घटना 2013 की है तब तक मेरा संपर्क असम से जुड़ चुका था जैसे ही बी०एड०पूर्ण हुई मेरी नौकरी दिल्ली में पी०जी०टी० अर्थशास्त्र के रूप में लगी। वेतन ठीक-ठाक था 800 रु० प्रतिदिन , अगले साल 100रु० की वृद्धि के साथ 900 रु० प्रतिदिन हो गया। दिल्ली सरकार की कृपा से तीसरे साल 1445रु० प्रतिदिन हो गया था। अब मेरा सपना पूरा होने वाला था कौन-सा ? घर की दीवारों को नया रूप देने का जो अभी चल रहा है।

ये भारतीय समाज है यहाँ ग़रीबी,बेबसी,लाचारी के होते हुए अगर सामाजिक भेदभाव , छुआछूत ,जातिप्रथा का कोई शिकार होता है तो जख्म पर नमक का काम करता है।

खैर, जिन्दगी बहुत सुन्दर है इसे बिना भेदभाव के खुल कर जीना चाहिए। और कब असम पहुँच गया मुझे भी पता नहीं चला और अभी 2019 चला रहा है।

संदीप कुमार
स्नातकोतर शिक्षक (अर्थशास्त्र)

जीवन

जीवन वह रंगीन किताब है
जिसमे हर रोज रंग भरे जाते है
किसी दिन खुशी का तो
किसी दिन गम का।

कभी ग़मों को छुपाने
कभी खुशियों को जताने
की अदा है जीवन
जीवन के हर पन्ने को
रंगने की कला ही तो है जीवन।

जीवन वह किताब है
जिसमे बचपन के उल्लास
जोश और यादों को संजोया
रिश्तेदारों व दोस्तों का
लेखा-जोखा ही तो है जीवन ॥

सभी का जीवन प्रेरणादायक
जरुर होता है चाहे वह
अच्छा हो या बुरा
सीख तो दोनों से ही मिलती है
यही प्रेरणा ही तो है जीवन।

जीवन की गहराइयों में
उतरकर जिसने हर कदम
किया चुनौती का सामना
उसी सफलता की कहानी है जीवन।

बचपन की शरारतों व खेलों ,
कार्यो की यादों को
बुढ़ापे में याद करके खुश
होना ही तो है जीवन
अपने प्रियजनों के साथ बिताए
पलों की कहानी ही तो है जीवन।

लोभ-मोह-माया ,ईमानदारी
निर्दयता-दयालुता,ममतत्व ,प्रेम
सभी का मिश्रण है
हर पल बीते अंश की तस्वीर है जीवन।

आखिर जीवन वह क़िताब है
जिसमे हर भविष्य का पन्ना
खाली होता है ,उस पन्ने को
अपने संघर्षो से रंगना ही तो है जीवन।

ब्रह्मा नन्द कोली
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(हिंदी)

शिक्षक को आह्वान

उठा कलम अपने विचारों का
उद्धार करने के लिए
कि आप एक शिक्षक हो।

क्यों डरते हो ? अपने ही
भावों को बताने में।
क्या-क्या अनुभव हुए जीवन में
उन्ही को लिख डालो।
कि आप एक शिक्षक हो।

परवाह नहीं है अनुदेशों की
कहाँ-कहाँ क्या प्रतिक्रिया मिली।
अपने अरमानों को छिपा सके,
वो शिक्षक नहीं हो सकता।

उठाओ कलम अपने विचारो को
लिखने को, कभी बच्चों के साथ,
कभी प्रकृति व मौसम के साथ
बिताए पलों का अनुभव ही लिख
दो ,क्योंकि आप एक शिक्षक हो।

अपने दबे ज्ञान- विचारों का करो
प्रकाशन प्रेरणा देने को , क्योंकि
आप एक शिक्षक हो।

कभी यहाँ चले ,कभी वहाँ चले
ज्ञान के मोती बिखराते चले
कुछ सत्य कल्पना को लिखकर ,
करो,अपने विचारो का आह्वान,
कि आप एक शिक्षक है।

ब्रह्मा नन्द कोली
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
(हिंदी)

Name - Simran Karmakar
class - VIII / B

Yoga is a way of
flexibility

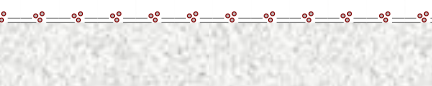

SAVE FUEL FOR HEALTHY
AND GREEN ENVIRONMENT

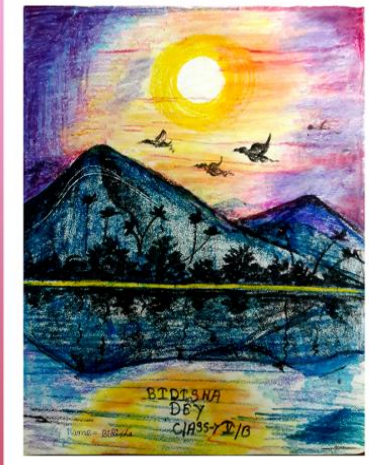

BIDISHA
DEY

NAME :- ISHITA ROY CLASS :- VII SEC :- B

ART PROJECT
WORK
Name - Nikita Das Roll-No → 10
Class → VII Sec → B

BIDISHA
DEY

Name - Anya Singh
class - VI 'A'
Rollno - 17

OIL PASTELS

Assamese, Bengali & Sanskrit SECTION

Bhanita Das
P.G.T. (English)

Joyeeta Dey
T.G.T. (English)

Sangeeta
TGT (Sanskrit)

Jayanta Chowdhury
(Dance Expert)

Samriddhi Sarkar
10th (A)

Editorial board members

ভূপেন মামালৈ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি

—সুদীপ্তা দাস
দশম (ক)

আমাৰ মৰমৰ ভূপেন মামা
অসমৰ বুকু শূন্য কৰি
সকলোকে কন্দুৱাই ধৰাৰ পৰা
গ'ল হৈ আঁতৰি।
তোমাৰ অবিহনে লুইতো আজি
হৈ ৰ'ল নিথৰ হৈ,
তুমি যে আছিলা সকলোৰে বাবে
মৰম আৰু আদৰৰ।
গছ-বিৰিখ, চৰাই-চিৰিকটি
আজি স্তব্ধ হৈ গ'ল,
আকাশে বতাহে তোমাৰ গান
প্ৰতিধ্বনি হৈ ৰ'ল।
চাও আমি বাবে-বাৰে
নিশাৰ আকাশখন,
কিজানি হৈ আছা
এটি উজ্জ্বল তৰা হৈ।
এতিয়া মাথো চৌদিশে
তোমাৰ গীতৰ লহৰ
যি গীতে কঁপাই আছে
সাগৰ - মহাসাগৰ।

গীতৰ মাজতে ভূপেন মামা
থাকিবা জীয়াই
তোমাৰ দৰে মহান শিল্পীৰ
কদাপি নহয় মৃত্যু।
ভূপেন মামা লোৱা একাঞ্জলি
আমাৰ শ্ৰদ্ধাঞ্জলি।
আমাৰ হৃদয়ত থাকিবা
তুমি সদায় উজলি॥

—o—o—

Scanned with CamScanner

संस्कृत भाषायां महत्वम्

संस्कृत परिष्कृता व्याकरण सम्बन्धि- दोषरहिता भाषा संस्कृत - भाषा इति निगद्यते । इयं भाषा देवभाषा गीर्वाणगी: आदि शब्दै: सम्बोध्यते । अस्माकं संस्कृत भाषा विश्वस्य सर्वासु भाषासु प्राचीनतमा सर्वोत्तम साहित्य संयुक्ता च अस्ति । अस्यां भाषायां उपयोगिता एतस्मात् कारणात् अपि वर्तते यत एषां एव सा भाषा अस्ति । यत सर्वासां भारतीयानाम् आर्य भाषाणाम् उत्पत्तिः मूल । इयम् एतासां सर्वासां भाषायां जननी, अतः सर्वभाषाणां मूलस्वरूप ज्ञानाय एतस्याः आवश्यकता भवति ।

नाम - अमृता कुमारी यादव
कक्षा - सात / ब
अनुक्रमांक - 1

समय:

समय: निरंतर चलति,
न कदापि सुस्थ: भवति,
य: अस्य पालनं करोति
स: एव सर्वदा उत्तमम् फलं खादति ।
अस्य एकैक क्षणं मूल्यवान अस्ति ।
अयं कस्यापि प्रतीक्षा न करोति,
न अयं कस्यापि मित्रं
य: अस्य दुरुपयोगं करोति,
स: कदापि प्रगति न कर्तुम् शक्नोति
अयं जीवनस्य आधार: अस्ति।

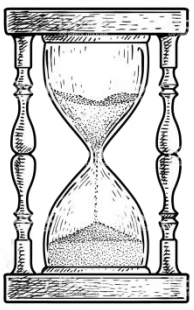

शिक्षा :- अत: अस्माभि: सर्वे समयस्य पालनं करणीयम् । इदमेव सफलताया: मन्त्रम् अस्ति । "

दिगांगना
कक्षा - 'VII अ'.

"एषा मम धन्या माता"

एषा मम धन्या माता।
एषा मम धन्या माता। ध्रुवमदम्

था मां प्रातः शय्यातः
जागरयति सम्बोधनतः
हरिस्मरणं था कारयति।
आरुस्मरणं था कारयति। एषा मम ---।

कुरु दत्तं ग्रहकार्यम् तवम्,
कुरु सुत। पाठभ्यासं तवम्।
आदेश ददती स्वम्,
योजयते कार्ये नित्यम् नित्यम्। एषा मम--।
मधुरं दुग्धं ददाति था,
सवादु फलं च ददाति था।
यच्छति महां लवणान्नम्॥ एषा मम ---।

त्रिशित
कक्षा VI 'अ'

व्यर्थम्

तेलं विना दीपकः व्यर्थः ।
सत्कर्म विना धर्मः व्यर्थः ।
जलं विना मेघः व्यर्थः ।
श्रद्धा विना भक्ति व्यर्थः ।

सेना विना सीमा व्यर्थः ।
जलं विना रूपम् व्यर्थम्
हरिभजनं विना जीवनं व्यर्थम् ।
साहसं विना अस्त्र व्यर्थम् ।

अर्पिता चौधरी
कक्षा - VI 'ब'

शुभ यात्रा

संस्कृतयात्रा मङ्गलयात्रा
सञ्जीवनी शुभयात्रा ।
पुलकित मधुना
संस्कृतरथ घोषैः ॥

पश्यतु मे मम भारतभूमौ
संस्कृत नटन विलासम् ।
एषा यात्रा सुन्दरयात्रा
अभिनव सन्देश यात्रा ॥

मातुः कीर्तिम् उद्घोषयितुं
वयं न्यामो यात्राम् ।
जीवनयात्रा साफल्यार्थं
शुभयात्रायां यामः ॥

अर्चिता VII 'अ'

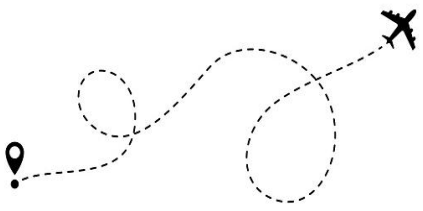

ঃ বিদায় ঃ

আসছে যে আমাদের বড় বেদনার দিন,
না জানি কেন, আমার মনে উঠছে তুফান।
যে আনন্দে কাটালাম এই দশটি বছর,
চলে যাচ্ছে সেই দিনগুলো ঝড়ের মতো।

আর তো পাবনা ফিরে, সেই দিনগুলো,
সোনার ছোঁয়া সেই ক্ষণগুলো।
মনে পড়ে, সেই দিনগুলোর কথা,
যখন গুরুজনেরা শেখাতেন —
আমাদের শিক্ষা ও সংস্কার।

কিছুদিন পর আমরা বিদায় নিতে চলেছি,
এই বিদ্যালয় থেকে, সময় যে চলে আসছে
মনকে যে আর পারছি না মানাতে
কি ভাবে যে মানাবো এই বিদ্যালয়ের সঙ্গে।

তবু নেই আমাদের হাতে, আর উপায় কোনো
মনকে সান্ত্বনা দিয়েছি শুধু এই বলেই
এসেছি যখন এই ধরাতে, বিদায় তো নিতেই হবে।

— ঐশ্মিতা মজুমদার
শ্রেণী - X/A.

'মা আসছেন'

মা আসবে বাপের বাড়ি.
শুরু হবে হুমদুমারি,
সবাই পরবে নতুন পোশাক,
সিল্ক, কটন, সটকা, শাড়ী,
সবাই পরবে নতুন জামা,
টপ স্কার্ট, পাঞ্জাবী পাজামা.
কি মজা কি মজা শুরু হবে সাজাগোজা.
পঞ্চমীতে মা আসবে
ষষ্ঠীতে বোধন হবে
সপ্তমীতে ঘোরা ঘুরি
অষ্টমী তে সন্ধী পুজো
নবমীতে নাচানাচি
দশমীতে মায়ের নিরজন
আসছে বছর আবার হবে
পুজোর আয়োজন।

সঋদ্ধি সরকার
শ্রেণী - X/A

ENGLISH SECTION

Bhanita Das
P.G.T. (English)

Joyeeta Dey
T.G.T. (English)

Ankush Paul
11th (Science)

Karan Das
11th (Science)

Sarbajit Kr. Roy
11th (Science)

A Thunderstorm

The wind began to rock the grass
With threatening tunes and low
He flung a menace on the earth,
A menace at the sky.

The leaves unhooked themselves from tree
And started all abroad;
The dust did scoop scoop itself like hands
And throw away the road.

The wagons quickened on the streets
The thunder hurried slow;
The lightning showed a yellow beak,
And them a livid claw.

The birds put up the bars to nests;
The cattle fled to barns;
There came one drop of giant rain,
And then, as if the hands.

That held the dams had parted hold,
The waters wrecked the sky,
But overlooked my father's house,
Just quartering a tree.

Amrita Kumari Yadav
Class VII B

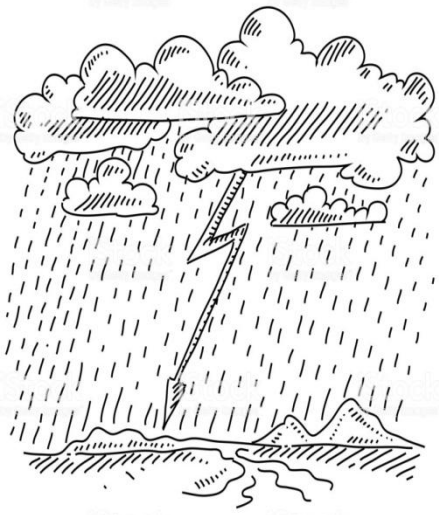

Artificial Intelligence

Artificial intelligence in Hindi it is called '*Kritim Hoshiyaaree'*
In computer science it is called machine intelligence. From Siri to self-driving car artificial intelligence (AI) is progress rapidly. While science fiction or sci-fi portray (AI) as robot with human like characteristic like Jarvis of iron man , AI robot, and **Detroit**: **Become Human** and many .

Now a days every one have their own personal (AI) like google assistant, Siri, Amazon eco which are used to play music ,news , and many more .

The 2nd type is advance from the first one. They can perform mechanical tasks, they are also working limited area like: Factories, Battlefield, and Constructional Area. And the last, 3rd type is most advanced from the first two type. It do not Work in a Limited Area. Stephen Hawkins, Elon Musk, and Bill Gates and many more others Big Names in Science and Technologies said that the Super Human Artificial Intelligence could provide Calculable benefits, but also can end the Human Race ,if they were deployed. The AI could be the "Worst Event in the History of our Civilization". This AI will have their own feelings, emotions, and do whatever is right for them.

By Akarshan Ghosh

Class XI Sc

SPACE JUNK

Space waste or space garbage from the mass of defunct, artificially created objects in space, especially Earth orbit. These include old satellites and spent rocket stages, as well as the fragments from their disintegration and collisions. As of December 2016, five satellite collisions have generated space debris.

The US Air Force Catalogues and Tracks Space Junk

Since the early 1980s, the US Air Force has maintained a dedicated team that logs and tracks as much space debris as possible. Over 20,000 individual items at least the size of a small ball are being tracked as well as about 500,000 marble-sized pieces of debris—and that number looks likely to increase.

Each of these items is traveling around the Earth at around 28,000 kilometers per hour (17,500 mph). Should any of them strike another item—be it more space debris, a "live" satellite, or even the International Space Station—the consequences would be tragic. Even a single speck of paint (which is too small to track) hurtling around the planet can cause considerable damage to spacecraft or kill an astronaut during a spacewalk.

Danger to Critically Important Satellites

Should a satellite be hit by a piece of space debris, it would either be severely damaged or completely destroyed. Should that happen to even just a few major satellites, then life here on Earth would be drastically affected. Live television broadcasts, the Internet, GPS, and your mobile phone could be affected.

As cosmetic as those changes may be, there is also the very real and grim possibility that such destruction of satellites could lead to conflicts between nations. In an already suspicious world, an innocent accident like a satellite being struck by space debris could be mistaken for an attack on a country's defense capabilities, which in turn may cause retaliatory action. Such predictions bear grim similarities to the days of the Cold War.

In A Matter of Centuries, We Will Be Trapped On Earth by Space Junk

If no way is found to stem the ever-growing amount of dead, man-made items floating around our planet, then it is predicted that in only a few hundred years, we will essentially be trapped on Earth, with space missions being impossible to launch due to almost certain collision and loss of life. There is also the unknown effect that an increased amount of space debris might have on Earth and future life on the planet. Might there be the real possibility of a large piece of space junk reentering the atmosphere and not burning up, becoming a meteor hurtling toward the ground?

The amount of gadgets and even life-saving devices utilized by many people on Earth today as a by-product of space exploration is vast.

Ankush Paul
Class XI (Sci)

Being Helpful

Once upon a time, in a village, there was a boy named Mannu. He was a very bright student. One day, he was feeling hungry. But he did not have enough money to buy anything. The boy looked around and walked further. Mannu asked for a glass of water to others. A girl named Geeta said, “What do you want?” he replied, “Please give me a glass of water.’ The girl asked him to wait. She gave him a glass of milk instead. Mannu asked her for her name. He left the place thanking her. He later on became a very famous doctor. One day his assistant explained to him a very peculiar case. When Mannu learnt that the name of the patient was Geeta, he thought and went to check on her. He provided her with the best treatment. She was getting better now, and could walk and run very well. Mannu’s assistant told Geeta that her bill was paid by the glass of milk. Geeta had no idea how it was possible. Mannu told her the entire story. Geeta went back to her village happily.

Alok Kumar Yadav
Class VII B

Importance of Technological Literacy

The term “technological literacy” refers to one’s ability to use, manage, evaluate and understand technology. In order to be a technologically literate citizen, a person should know and understand what it is, how it works, how it shapes the current society, and how in turn the society shapes it.

A characteristic of a technologically literate person has some abilities t do so, which allows them to use their inventiveness to design and build things. Technological literacy is much more than just the knowledge about computers and their applications. It involves a vision where every person has the degree of knowledge about the consequences of the use or abuse of technology and how that affects society in a broader sense. We live in a world that is influenced, or we can even go to the extent of saying that, controlled by technology. Technological literacy prepares individuals to make well-informed choices

in their role as customers. Consequently, technology is the best achievement of scientists during the entire existence of the human race in the world, since it has improved all aspects of our lives, making it safer and more

convenient. Technological literacy is not just about knowing computers, the internet, and how to use word processing, spreadsheets and email management. Fundamentally, it is productively, efficiently and effectively using computers and information systems to meet productive goals. It is also instrumental in developing one's human capital towards self-sufficiency. The power and the promise of technology can be further enhanced if all the people are technologically literate in future. Anything short of this may threaten our ability to be competitive in the world marketplace and to solve human and other problems through the wise use of technology.

Pronoy K. Lodh
(Class XII Science)

IS TIME TRAVEL POSSIBLE?

A Fictional Approach:-Time travel-moving between different points in time has been a popular topic for science fiction for decades. Franchises ranging from "Star Trek" to "Avengers: Endgame" have seen Humans set in a vehicle of some sort and arrive in the past or future to take on new adventure. Each come with their own time travel theories.

However, the reality is somewhat different. Not all scientists believe that time travel is possible. Some even say that an attempt would be Fatal to any human who chooses to undertake it.

What is Time? : - Albert Einstein showed that time is a "Relative Stubborn Illusion". It is the Fourth Dimension, just like Space (consisting of three Dimensions), time also provide coordinates, although it moves forward progressively.

According to his 'Special Theory of Relativity' approaching the speed of Light, a person would age much slower that his Twin at Home. Also, his 'General Theory of Relativity' shows that Curvature in gravity can influence the timeline. And it is proved by the GPS satellite.

So, is it Possible? : - It is Beyond the Technologies used in the Present Day. In Future, advancement in Quantum Theories could perhaps provide some Techs to overcome Time Paradoxes.

Thus, it is about 'Time' to see when it would be accomplished.

Subhayan Biswas
(Class- XI-Science.)

School Life

School life is a daily routine for us.
In the morning, we are sure to make a fuss
Even when the sun is not yet up,
Here we are, awake at 5 AM sharp.

We feel that school is such a bore.
We feel that school is a shore
Parents say, “School’s great! Now, go!”
We say, “Well, what do you know?”

Late a minute and we have to run
Eyes half open, shoelace undone
We reach school and we see our friends.
And immediately, the torture ends.

Talk back to teachers, and detention we serve.

No doubt, it is sometimes what we deserve.

Sometimes they are as cold as ice
And other times they’re really very nice.

They teach us and give us a helping hand

They’re forever ready to be a friend
They have built confidence in us
Just not when they are being really harsh.

Some may see school as a torture chamber
Some cannot wait for the holidays in summer.
But it depends on how we look at school
Honestly, positively, school is cool!

Sudipta Das
Class X A

Plant A Tree

Plant a tree, Plant a tree.
Keep the environment pollution free.
They give us wood, shade and food
So how can you think of cutting them?
They give us oxygen without which we can’t live for a second.
S o if you cut one of them,
Remember to plant more than ten.
Plant a tree, plant a tree.
Keep the environment pollution free
Life is not possible without trees
So grow them four five or six.

Priyam Das
IV B

The Man in An Onion Bed

I met a man in an onion bed.
He was crying so hard, his eyes were red.
And his tears rolled by the end of his nose.
As he ate his way down the onion rows.
He ate and he cried, but for all his tears
He sang, sweet onions, oh my dears..!
I love you, I do and you love me,
But you make me as sad as a man can be.

Annisha Dey
IV-B

What is God

God is truth, can't be proved.
God is energy, can't be used
God is life, but not death,
God is one not few.
God is beautiful, nice to view.
God is the smallest,
With the largest reach.
God watches everyone,
Keep equal eye

on each.
God is nowhere, but with you !

Gitavi das
vii

TEACHER

Teachers paint their minds
and guide their thoughts.
Share their achievements
And advise their faults
Inspire a love
Of knowledge and truth
As you light the path
Which leads our youth
For our future brightens
With each lesson you teach
Each smile you help reach
For the dawn of each poet
Each philosopher and king
Begins with a teacher And the wisdom they bring

Anya singh
VII

THE SCHOOL

School is a learning station.
School is a door of education
School will become your best friend
And you can find your success.
School will help you to learn many thing
So you can be a good human being
If you go to school,
Then only you are a wise not a fool.

Beenita Das
VI B

Way to Paradise- Ooty

It was a misty day. The month was June, 2018 and the date was 17th. I was in a car towards one of India's heaven 'Ooty'. I was with my family and one of my classmate's family. We are climbing the imaginary stairs of the Nilgiri Hills with our car. I was watching the enormous hills which was inviting me. I was amazed to see the beauty of the hills and the environment. There was my camera with me and I was capturing the beautiful moments. We met many animals on the way like monkeys, donkeys, elephants, tigers and many more. I captured all the moments. We were enjoying very much but suddenly the car stopped. My father told us to come downwards. It seemed like we can touch the clouds. We went to Ooty Botanical Garden which is too beautiful that its beauty can't be expressed in words. We enjoyed boating there and enjoyed many more fantasies. At evening, we went to Ooty coffee plant, Ooty market from where we bought out of the car. It was a big area where the car stopped and we all followed him. We entered through an entrance and found many small shops nearly. We all entered in a shop and luckily… it was a tourist shop of one of the Indian Cricketer Anil Kumble's brother Dinesh Kumble's shop. We met him also and clicked pictures with him. We bought a book of Dinesh Kumble which is based on photography as he was a wildlife photographer. Then we again went towards our destination.

Finally it was 2:00 pm and we reached Ooty which was on the top of Nilgiri Hills. We can watch the wonderful environment handmade chocolates and many more.

It was 10:00 pm when we are back to Bangalore an I was missing those moments which we spent few hours ago. But… nothing to do… I have to recall the moments by watching the captured pictures.

- Soumili Das
-Class–X-A

Why Single Use Plastic Should Be Banned

Plastic is non-biodegradable. As compared to organic waste, it takes hundreds of years to decompose. But, it is cheaper than other substances. It is not possible to use glass and paper in place of plastic because it will prove to be much expensive and as paper is made from trees, it would be a disaster for the environment. Instead of banning plastic altogether, banning of single use plastic seems like a solution the world is waiting for. Single use plastics are those plastics, which we use for a single time, like plastic bags, and packaged water bottles. This plastic is the main cause of water pollution. Many marine animals die every year because they eat these plastics. There are many other problems caused by plastic. One thing we can use is cotton bags that resemble plastic bags. In some parts of our country, it is already banned. I believe that if we work together, we can achieve It. Anything is possible in the world, and if we want, we can most definitely abolish plastic from this world.

Digangana Sarmah
Class VII A

SCALING THE NATURAL SKYSCRAPER

Denver and his wife. Heidi got ready to conquer Mt. Everest Suddenly they heard several cries. They did not knew what was happening. After some time it came to their knowledge that there had been an avalanche which had brought an entire village down. Only roofs could be seen of the houses. Then Denver took Heidi inside their camp and asked her if she's easy being their ascend. Denver had asked this because he knew what the consequences could have been after an avalanche, Heidi who had grown up in a village in Sweden replied boldly which words still echoed in the Denver cars those words said " what a hideous person you are you use fearless . demonishly strong surnames to your name yet you fear snow one of the gifts from mother nature, begone do not try to stop me from accomplishing my dream". These words cut through Denver's steadfast mean as if it were butter and the words were knife. Denver now armed with determination got ready to scale the only skyscraper that he had not scaled. Heidi asked him if he were afraid of the avalanche Denver's quick reply astonished Heidi as he said "let's race to the summit. They asked their fellow guide to show them the way. The guide though not famous possessed unique set of climbing skills. They began their ascend. They were at a height of 5 thousand metres when the guide left them. They looked each others faces and started their race within 3 hours they were at a height of 7 thousand metres though they had large portion to cover yet it felt like they could fly as they were above the clouds Suddenly Heidi lost her footing and began to fall .But somehow Denver managed to save her. She had sprained her left ankle. She was not fit for climbing But still she managed to have the courage to each for the summit, She at last reached the top with a sprained ankle after un hour. She was above everything Nothing had stopped from achieving the goal of her life. It was her dream that fueled her to scale the natural skyscraper

Moral- If you are crazy enough to imagine the impossible then you are strong and determined enough to achieve the impossible.

- **Prashnik Nandy**
- **X/B**

PRIVATIZATION OF PUBLIC SECTOR UNDERTAKINGS

The privatization mainly refers to transferring the power of authority from Government to the Private hands. If same happens in the case of PSUs then it is called the privatization of PSUs.The Public Sector Undertakings are running in India for so long. but now many renowned personalities of India are suggesting the Indian Government to step up towards the privatization of these PSUs. Some are in favour and some opposes the idea because we are from a developing country.

It is obvious that the idea of privatization of many PSUs must not have been arisen instantly but may be the result of many surveys and researches conducted on the concern. Some reasons for the privatization of the PSUs are as follows:

- The PSUs spent unnecessary capital in extra activities including wasting time and man- power.
- PSUs are very insensitive to the number of employees and accept the candidates for employment in large numbers. It results to the wastage of money paid as salary.
- PSUs are also not concerned about the quality of the services provided and always prefer a long term tender which reduces the quality of services and wastes the time.
- The employees of PSUs are often found irresponsible and they lack of accountability. They also found blaming one another for their faults.
- The PSUs generally don't acclaim employees according to their performances and the best performer is treated in the same way as a worst or average performer.
- PSUs are often managed by the related ministry and Board of directors who sometimes lose their power which causes failure to the achievements.

PROS OF PRIVATIZATION

The privatization of PSUs is the need of the time and is very necessary for the growth of the nation. The privatization has many strong favours and thus seems to be profitable for the country.

- The PSUs in India are suffering from the problem of inefficiency and privatization would be the best tool to remove this inability.

- The privatization of PSUs will reduce the burden of the Government and will also help in generating financial resources.
- The privatization will also help in improving the performances of the employees, making them accountable and increasing their efficiency.
- The private sectors understand better the value of time and money and so make the optimum utilization of the resources available.
- The privatization of PSUs will bring the competitiveness and thus increasing their productivity, it will bring them in the international markets.
- The privatization of PSUs will free them from the Governmental and political interference.
- Privatization will help in removing the bureaucracy from the Enterprise.

CONS OF PRIVATIZATION

Although privatization will bring many positive changes in the economy yes it has some dark side too.

- Although the main goal of privatization is to increase the efficiency of the Enterprise yet the inefficiency at certain extent is found in private organizations too.
- As the PSUs works with the motive to social welfare, the private enterprises will be mostly concerned on the profit of the enterprise.
- The privatization of PSUs will reduce the opportunity of employment.
- It is also seen and is obvious that the employees in private enterprises often become the victim of exploitation.
- Also an Industrial dispute is seen in private enterprises which will be obstacle in the smooth run of the enterprise.

So these are some important Pros and Cons of the privatization of a PSU. Neither any Pros nor any Cons can be avoided and Government must think over these points seriously. There are some more Pros and Cons apart from these which can affect the economy.

Conclusion

The Government of India has taken serious concerns on them and is planning to privatize the PSUs but before applying the rule of privatization, the question must be asked that if these problems can be removed without privatizing them. If the answer is ‘Yes’ then I think improving the services of PSUs is a better way than privatization.

Raghunath Prasad Sinha (TGT-W.E.)

Green Fronds in the Wind

The lush green fronds of the coconut trees dancing in the breeze seemed to be cheerily waving goodbye."Why so happy? At least look a little sad." my heavy heart cried out silently. As if on cue it started pouring and soon I was drenched to the skin in the midsummer shower. The untimely and inconvenient downpour didn't bother me much as it reflected my 'emotional status'. The thought of going away from home, all the familiar sounds and smells, friends and dear ones, sent pangs of deep sorrow and frustration from my heart and it coursed through my entire body. I had to go, there was not much of a choice, it was a matter of survival. Yet my heart cried out with all its might against my Maker, "Why Lord, why?!! Why this??"

The green fronds were now lashing in a frenzy. They looked like limbs about to be torn away from slender bodies. But they did not give up so easily. My thoughts were murky but seeing those leaves put up a fight brought a strange calm upon me. A tune began playing in my mind as if in answer to my prior outburst,

'Count your many blessings, name them one by one
And it will surprise you, what the Lord hath done.'

I didn't have to ponder for long before I realized that the things I would miss the most were blessings which I should be grateful for, my loving family, my dearest pets, my beloved teachers, my adorable kids.... As the gentle wind cleared away dark clouds from the brilliant sun, it dawned upon me that wherever I go, by the grace of Almighty I will be surrounded by goodness even in the face of the darkest storm.

Anu Rachel Jogi
(PGT Biology)

Short Communication : Information Literacy in Digital Age

When we studied information science in the early 2000s, we spent hours sorting through databases of science abstracts to carefully narrow down results using Boolean searches. After that, we had have to wait days for the hard copy of the technical papers which were ordered from the national science library.

Without doubt, the internet, and specifically the World Wide Web, has transformed the information environment, providing more rapid access to a greater volume of material than possible at any earlier time. Today's world of powerful Web-based search engines presents students with a different information landscape from the one we have experienced. Students go about their search with the assumption that they will be able to find answers to their questions almost instantly. Google has completely changed the scenario. It has variety of easy-to-use search engines, based on free-text searching of the content of public web pages. The extension of the “basic” Google search function into Google scholar (providing access to non-copyright academic material) (Tenopir, 2005), Google print (searching the digitized full text of printed books, from publishers, booksellers or libraries, and allowing the viewing of a small extract of copyright material) (Fialkoff, 2005) gives more ways to searching techniques. Yet, the instant access to information through search engines including Google is a double-edged sword. For serious academic inquiry, it's important that the information retrieved is the most accurate, highest quality, and as relatively up-to-date as possible. students has to develop good habits before they enter the workforce, it's vital to educate students early in their academic careers on how to determine what information is reliable and what is misleading when using search engines (Andrew Brown; June 2012).

Information literacy knows when and why you need information, where to find it, and how to evaluate, use and communicate it in an ethical manner (CILIP 2004).

It is very important to know some of the information literacy skill such as, Task formulation, Information seeking behavior, Location and access, Information use, Information evaluation etc. Information literacy skills will help students to achieve this target in a broader sense, in student centered learning. When children are educated with the necessary information literacy skills,

consequently, the society becomes information literate (Ranaweera, 2008). Besides this, students should know about information literacy and digital library resources, they should learn how to evaluate the quality of information and sources, and new sources of information and research techniques. For example, librarian and other faculty of National science library, they always motivate students to go beyond Google searches and use alternative resources when conducting research.

With the explosive popularity of e-readers, iPads, and smartphones, access to information is easier than ever. Advanced information literacy is required in an information age, and students must master and continue to develop this skill throughout their careers (Andrew Brown; June 2012).. Information literacy is as important as providing high quality resources to them. Workshops, presentations and the use of a variety of resources in the classroom are easy and effective strategies to help students improve information literacy. Thus, to meet the need of challenges as well as to deal with the rapid development of contents and information technology all we have to update ourselves with the latest information literacy skills.

Deepak Jha
(Librarian)

From a Bookworm's Chronicles

"A reader lives a thousand lives before he dies. The man who never reads lives only once"

-George R. R. Martin.

If I ask you who you are, you would come up with a lengthy introduction, that you have probably presented a million times in your entire life. Your name, your family, your home, your education and professional achievements. Is that all? Am I forgetting anything? You are what you are. But imagine, being able to live a thousand different lives with each and every book you read. If you were a reader of Salman Rushdie, you could have been Salim Sinai; if you loved Ruskin Bond, you could be Rusty; and if you loved the person I started this article with, you could be Jon Snow, who "knows nothing" but turns out to be the hero at the end of every episode.

Have you ever come across this one particular facebook post that is attributed to a hundred different authors? It says – "A book is a magical thing that lets you travel to far-away places without ever leaving your chair." I really do not know who said it, but nevertheless, it is true to the letter. A book is a world in itself – a breathing, laughing, crying world. That's the beauty of reading. You can get lost in a different world, its beauty, its troubles, its worries, and its triumphs, every time you open its pages and delve into them. I can quote endless posts, quotes and images from pinterest to prove my statement, but what's the point. We know it all, and ignore it all.

Why do we read? As a teacher, if I ask this question to my students, the obvious answer would be to pass exams. If I turn the cannon towards my colleagues, they would say to enhance our knowledge of the subject or to empower our teaching. How many of us read to appease our minds and souls? I know we are all very busy. 21st century life is full of trends and thought processes changing at every step. I know it is all very hectic. I know we are burdened by something new coming our way every day. But,

what happened to our social skills and the need to develop them among children especially? If not my students, at least I can assure myself that my colleagues have spent many a starry nights in the yard, on a charpoy lying about with their siblings, cousins, and most importantly a grandmother, or a grandfather, and their endless stories. These stories helped develop our imagination, our comprehension and speaking skills, and also our ability to process critical thinking. My heart goes out to the children who grew up in a close concrete surrounding with no one to tell them stories. So will we just leave our children to deal with these miseries on their own? I hope you can guess where I am getting at with this. Guess what can provide our children an opportunity to have what we did as children. A library full of books, stories, poems, rhymes, history, drama, and what not. Picture their imagination coming to life.

Do I need to remind us the miracle that literature is? Do I need to remind you how many poets delve into their pain and miseries on the world and beautiful verses came out of their quills? Literature is the one medicine for all your woes. No, I am not trying to sell literature. I just want you to question yourself. Which was the last

book you read for pleasure, and not out of conviction? Which was the

book you read that gave you purpose in life? And to my children, I want to tell them one thing, the day your sleepless nights will be caused by a feeling of “Let me read just one more chapter tonight, just one more”, no one can stop you

.

last book that pacified your restless soul? Which was the last

from achieving whatever life you want to live. Be it Saleem Sinai’s, or Rusty’s; or Jon Snow’s. Or who knows, you could set out like Frodo Baggins of the Shire to write your own adventure

By Bhanita Das

PGT ENGLISH

Maths : A Challenge

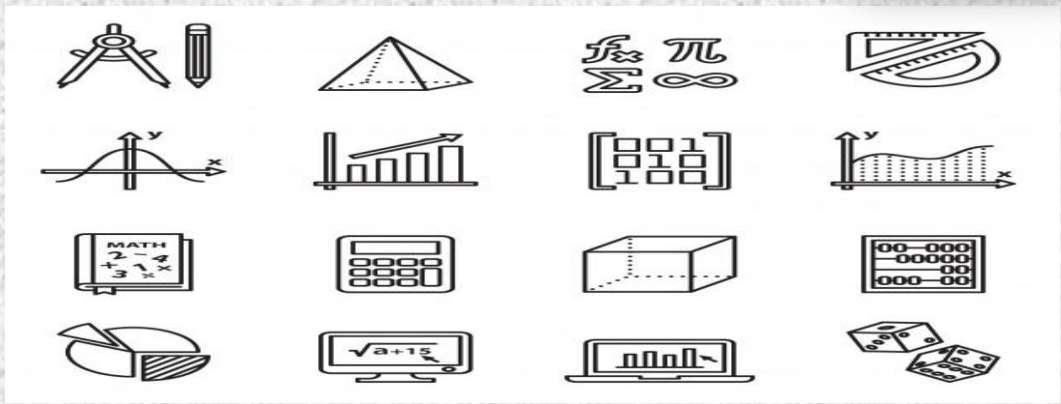

Try, try and try,
The more I try,
The more I cry.

I practice maths with my heart and soul,
Yet I am not able to achieve my goal.

I never get marks in Maths, inspite of my great endeavours,
Fate is never in my favour.

I really want to improve my maths,
Because I love this subject
And for this I am trying my level best. I am candid so I confess

In mathematics examination I always create a mess

All the answer I guess
And ultimately the marks I get are quite less.

I believe that – I do amplepractice. I'll one day probably achieve my goal.
And I seriously have to improve,
Because in our lives maths plays every significant role.

Ravi Kumar
PRT

Music for a Better Worldview of Education

"Sahitya Sangeet Kala Vihin Sakshat Pashu Puni Vishan Hin"

It is very obvious that the purpose of education is not just to familiarize the students with subjects like History, Geography, Maths, or Science, etc, but also to felicitate wholesome development of the interests, inborn abilities and individual qualities among students. According to Swami Vivekananda, "Education is the manifestation of the perfection already in man."

Music has the capability to develop a child's inborn abilities with ease. Psychology has accepted this statement that there are many fields where students bear similarities and uniformity. Yet, there are areas where they display their unique abilities and distinction from the rest. For example, someone is good at games, someone is interested in drawing, or academics, or music. There are children whose IQ level is below average. For these children, music can turn out to be a very effective remedy to develop their intelligence. More or less all children are inclined towards music. Therefore, it has been said that everyone knows how to sing and cry. The raga, swara, arohan, awarohan, pakad, jaati, laya, taal, matra, gayan samay, etc are needed to me memorized in music. While performing, vocal artists and instrumentalists draw imaginations, and those imaginations are presented trough their performance on that very occasion. This is an individual characteristic of Indian Classical Music that a performance is judged on the basis of its freshness in terms of singing, imagination, and expressions. In this way, a child's memory power, imagination and creativity can be developed through music. Children can be given lessons in moral values and discipline through music with ease. It is very imperative that today's generation is taught moral values and discipline in a way that reaches down to their souls. In addition to stories, songs can be very effective in doing so. Children have always been keener on memorizing lyrics of songs, rather than lessons. As if it comes very naturally to them.

We can easily understand the crucial role music can play in imparting education, especially to children with special needs. Thus, we can conclude that for the overall development of children, music can prove to be very effective and helpful.

Gagandeep Singh (PRT MUSIC)

NECESSITY IS THE MOTHER OF ALL INVENTIONS

The ancients used to illustrate the fact that great need stimulates the intensive power. This differentiates human beings from animals, as we have evolved our personality and invented several devices for our benefits and comforts which animals did not. But it does not mean animals don't have intensive powers. For example: this wild bird, we are told, found water low down in an hollow tree, but was unable to enter the narrow passage that lead to water. In this predicament, it would have died of thirst, if it had not thought of raising the level of water by dropping many stones one after another into the hollow of tree.

If, however we study this point from another angle, we will realise that all progress have been possible because of longing for things and his necessity to do, achieve and have certain things. When a man needs a thing, he tries to achieve it by any method known to him. If he imagines an object that he need and requires for any purpose, he needs to invent it or discover it.

The story is a type of the way in which many useful inventions were made in early dawn of civilisation. The necessity of defence against wild beast taught primitive men to make flint-heads for his weapons, to invent blow pipes and bows and arrows. The necessity of obtaining shelter against the inclemency of weather taught him to build houses and cloth himself in skin of wild beast.

In this and many other ways we may imagine that most of the early inventions of mankind were the result of pressure of need. We see the operation of the same cause at work wherever man has to serve contest with nature.

The inventions in the early stage of civilisations, which are due to change and the necessities of living, may be regarded as many rough stepping stones to the greater inventions eventually arrived at by the methodical investigation of persons who, at a latter period of history, devoted

their whole life to scientific study.

Sandhya Kumari Ray

PRT

A Tale Of A Pencil

Rahul was upset because he had done poorly in his English test. His grand-mother sat with him and gave him a pencil. Rahul was puzzled and looked at his grandma and said that he didn't deserve a pencil after his poor performance in the test. His grandma explained, "You can learn great many things from this pencil because it is just like you. It experiences a painful sharpening, just the way you have experienced the pain of not doing well in test. However, it will help you to be better student. Just as all the good that comes from the pencil from within itself, you will also find the strength to overcome this hurdle. And finally just as this pencil will make its mark on any surface, you shall too leave your mark on anything you choose to".

Rahul was immediately consoled and promised himself that he would do better.

Baby Kumari
(PRT)

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : I-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : I-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
50 YEARS 1963 - 2013
STANDARD : II-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
50 YEARS 1963 - 2013
STANDARD : II-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্ৰীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : III-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্ৰীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : III-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : IV-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : IV-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
केन्द्रीय विद्यालय উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
STANDARD : V-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
केन्द्रीय विद्यालय উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
STANDARD : V-B

STANDARD : VI-A

STANDARD : VI-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্ৰীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : VII-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্ৰীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : VII-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : VIII-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : VIII-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : IX-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : IX-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
तत् त्वं पूषन अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
STANDARD : X-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
तत् त्वं पूषन अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
STANDARD : X-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : XI-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : XI-B

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : XII-A

केन्द्रीय विद्यालय पू०सी० रेलवे, लामडिंग
KENDRIYA VIDYALAYA N.F. RLY LUMDING
কেন্দ্রীয় বিদ্যালয় উঃপূঃ ৰেল, লামডিং
STANDARD : XII-B

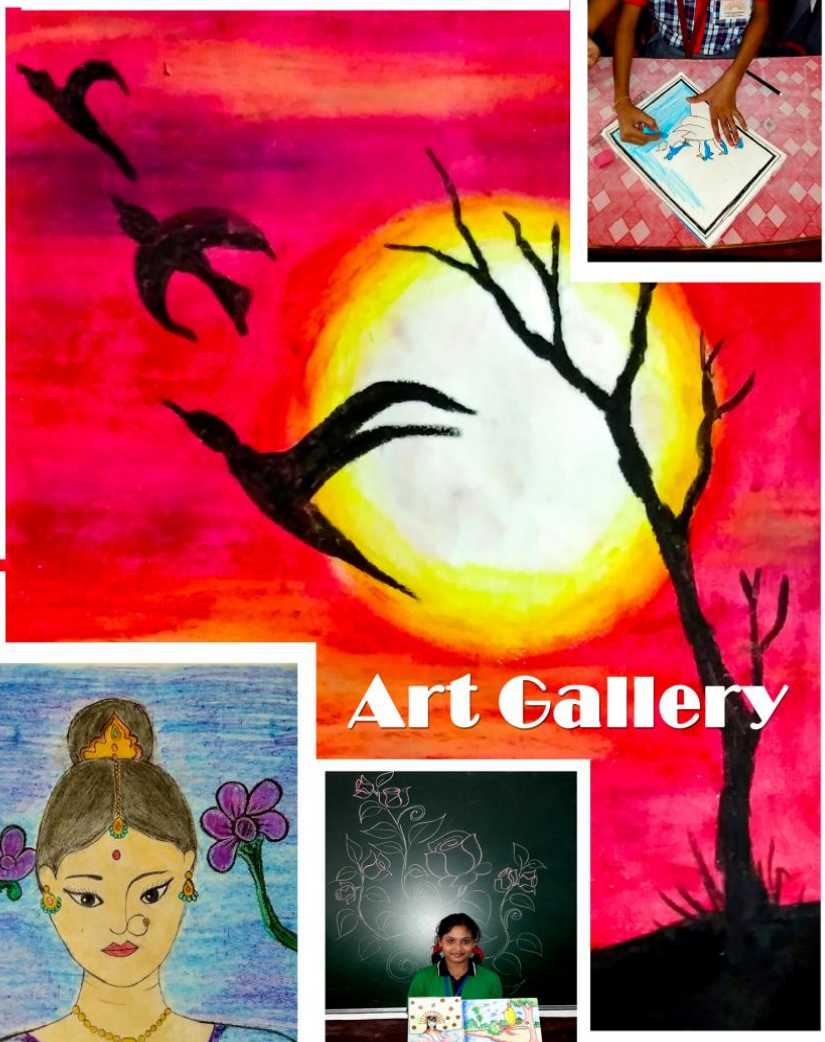
Art Gallery

Go Green

POLLUTION
FUEL INDUSTRIES

Snow white
Name-K.Bhavya Sri
Class-VIII-B
RollNo.-12

Name-K.Bhavyasri
Class-VIII-B
RollNo.-12

15 AUGUST
HAPPY INDEPENDENCE DAY
Name-K.Bhavyasri
Class-VIII-B
RollNo.-12

ADARIKA DEY Class-IV-(B) Roll-no:-1

NAME- NANDINI DAS
CLASS - VIII - B

Name - Nandini Das
Class - VIII - B

CLASS-4 SEC-B
ROLL NO-38

Smita mazumder
IX B

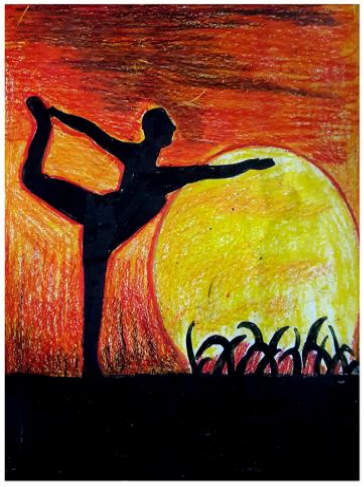

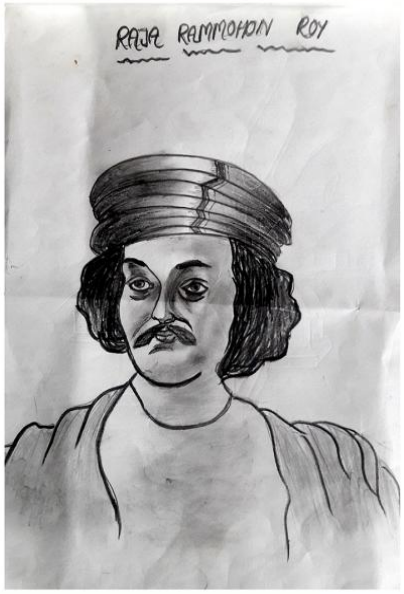
RAJA RAMMOHAN ROY

BARBIE

AREA OF CIRCLE =
AREA OF RECTANGLE = L×B
AREA OF TRAPEZIUM =
AREA OF TRIANG
AREA OF SQUARE
EA O PARALLELOGRA

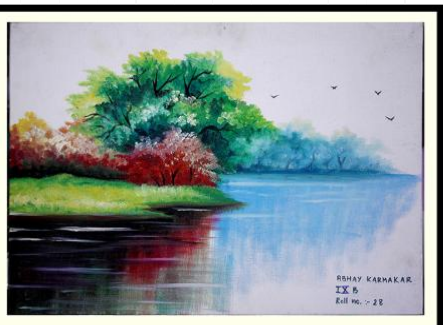

ABHAY KARMAKAR
IX B

VII-A Payel Malakar

MAHIDAS
Class VI

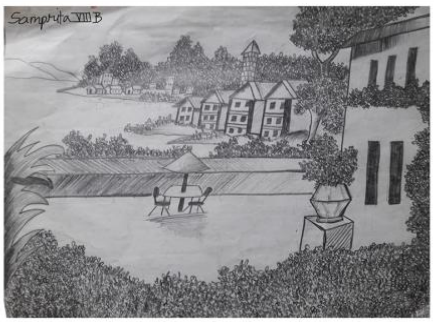

Samprita VIII B

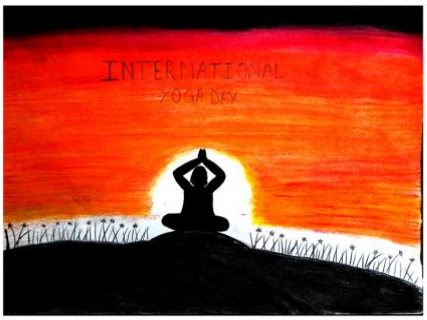

INTERNATIONAL
YOGA DAY

SNEHA BARUAH
VI/B

150वीं गाँधी जयंती

PLOGGING RUN 02 Oct 2019
(PICK UP LITTER + JOGGING)
FIT INDIA
FIT INDIA

PLOGGING RUN 02 Oct 2019
(PICK UP LITTER + JOGGING)
150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA
2 Oct Km
मेरा भारत स्वच्छ

FIT INDIA

PLOGGING RUN 02 Oct 2019
(PICK UP LITTER + JOGGING)

स्काउट-गाईड एवं कब-बुलबुल गतिविधियाँ

स्वच्छ भारत अभियान

कार्यानुभव गतिविधियाँ

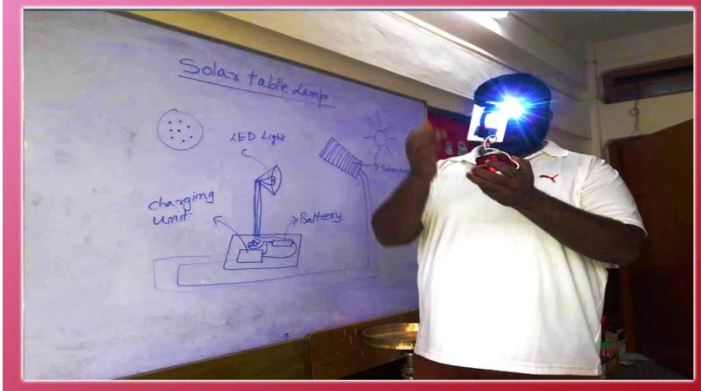

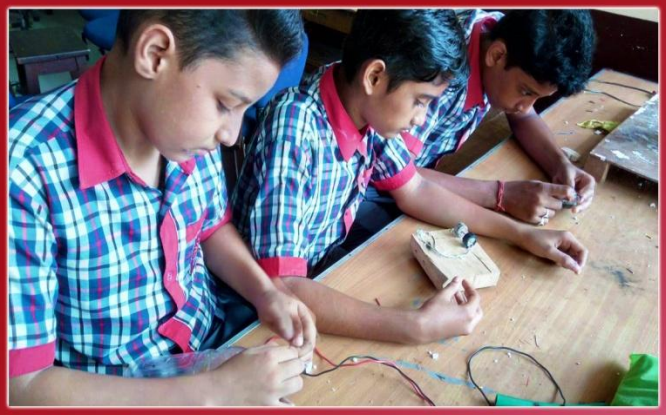

विद्यालय गतिविधियाँ (प्राथमिक विभाग)

योग अभ्यास

विद्यालय गतिविधियाँ

KV Lumding

KENDRIYA VIDYALAYA LUMDING
S A V E W A T E R
KV Lumding

विद्यालय गतिविधियाँ

KENDRIYA VIDYALAYA
ANNUAL DAY CELEBR
06 2019

2018.09.15 10:13

विद्यालय गतिविधियाँ

Kendriya Vidyalaya Lumding

Kendriya Vidyalaya Lumding

Kendriya Vidyalaya Lumding

तत् त्वं पूषन् अपावृणु

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

2019-20